३४
5.2

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

गीता विज्ञान

और

सत्संग भजन

लेखक :

पण्डित विद्याशंकर शास्त्री

प्रकाशक .

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरूमल 'आर्यप्रेमी'

आर्यन फार्मेसी, आर्यप्रेमी भवन

पो. बा. नं. २७ नला बाजार, अजमेर

मूल्य ७५ पैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदरणीय बन्धु, ॥ ओ३म् ॥

आशा करता हूँ कि ईश्वर की कृपा से आपका जीवन सुखमय, आनन्दमय, बलवान् और शक्तिवान् होगा।

ईश्वर न करे आप अपने जीवन में कमजोरी और निर्बलता का अनुभव करें। फिर भी अगर आप ऐसा अनुभव करते हैं तो हमें एक बार सेवा करने का सौभाग्य प्रदान करें।

हम परिपूर्ण परमात्मा की कृपा से आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम आपका जीवन सुखमय और आनन्दमय बनाने में कोई कसर न उठा रखेंगे।

सच्चाई और पूर्ण विश्वास के साथ हमारी हार्दिक इच्छा रहेगी कि आप सदैव स्वस्थ, बलशाली तेजस्वी और शरीर से दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति करें और ईश्वर आपकी सहायता करें। हम आपकी सेवा भरसक करें, जिससे हमको हार्दिक प्रसन्नता मिलेगी।

मैं हूं आपका भाई—

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरूमल 'आर्यप्रेमी'

आर्यन फार्मेसी, आर्यप्रेमी भवन, नला बाजार, अजमेर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

तिथी........ पु०सं० 1669 ... भारती पुस्तकालय
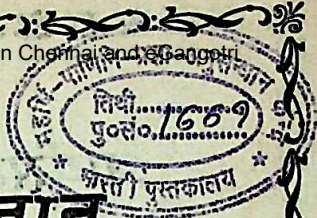
गीता विज्ञान

और

सत्संग भजन

पाणिनि कन्या महाविद्यालय
नगरहीहा, तुलसीपुर,
वाराणसी-5.

लेखक : पं० विद्याशङ्कर शास्त्री
बाईबिल आचार्य, हाफिजे कुरान

प्रकाशक व सम्पादक
वैद्य मोहनलाल वीरूमल 'आर्यप्रेमी'
आर्यप्रेमी कार्यालय, आर्यप्रेमी भवन
आर्यन फार्मेसी, नला बाजार, अजमेर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

आर्यसमाज के नियम

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

तिथी........
पु०सं० 1669
भारती पुस्तकालय

प्यारे भाइयो तथा माताओं—

इस पुस्तक को जनता की सेवा में रखने का वास्तविक श्रेय है श्रीमान् वैद्य मोहनलाल जी आर्य प्रेमी को। बड़ी ही उदारता से तथा जन कल्याण की दृष्टि से उन्होंने इस पुस्तक की छपाई का आर्थिक सहयोग देकर एक पुण्य कार्य में भाग लिया है।

"आर्य प्रेमी" नाम से आपकी साहित्य सेवा आर्य जगत् से छिपी नहीं है। आपका धार्मिक जीवन तथा दानी स्वभाव का वर्णन करना मेरी शक्ति के वाहर है।

स्व० हकीम वीरूमल जी आर्य प्रेमी ने जो पवित्र ज्योति प्रज्वलित कर सारे संसार को अपने आर्यत्व का परिचय दिया है उस अमर ज्योति को भाई मोहनलाल जी आर्यप्रेमी ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक उसी स्थिति में प्रज्वलित रख कर अपने पिता की परम्परा को कायम रक्खा है।

वैद्य मोहनलाल स्व० हकीम जी की दूसरी प्रतिमा है। वही बात, वही प्रेम, वही नम्रता, वही आदर भाव और वही जन सेवा का कार्य। तात्पर्यः—आर्य प्रेमी नाम से कोई नया परिचय देना सूरज को दीपक दिखाने जैसी बात है।

मैं भाई मोहनलाल जी का हार्दिक आभारी हूँ जिनकी कृपा से यह छोटी-सी पुस्तक मैं धर्म प्रेमी भाइयों तथा बहिनों की सेवा में अर्पण कर रहा हूँ।

विद्याशंकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

भारतवर्ष के पास चार वेद सृष्टिकाल से विद्यमान हैं। उपनिषद् जिसमें जीवन का लक्ष्य और आत्म-साक्षात्कार के साधनों का निरूपण उपस्थित है। दर्शन शास्त्र-जिसमें बड़े ही युक्तिवाद के साथ पदार्थ का विवेचन किया गया है। तात्पर्यः—उपरोक्त महान् ग्रंथों ने संशय को दूर करके मनुष्य को निर्भय बना दिया हैं। परन्तु आज का भारतवर्ष उपरोक्त महान् ग्रंथों को भूलकर पतन के मार्ग पर चलता हुआ दिखाई दे रहा है। ऐसी अवस्था में सर्व प्रथम सर्व साधारण जनता को भारतीय संस्कृति का वास्तविक परिचय करा देना मैंने आवश्यक समझा, और वह परिचय अखिल विश्व का अमर और अनुपम ग्रंथ श्री भगवद्गीता के द्वारा ही हो सकता है।

भारतवर्ष में सैकड़ों संप्रदायों का जन्म होने से अनेक मतमतांतर होने से संपूर्ण भारतवर्ष ढाई हज़ार वर्षों से एक विषम अवस्था में अपना अमूल्य जीवन व्यतीत करता चला आ रहा है। ऐसी अवस्था में सर्व साधारण जनता को अपनी वास्तविक संस्कृति क्या है ? हमारा योग्य मार्ग कौनसा है ? और हमारी धर्म पद्धति कौनसी है आदि जीवनावश्यक बातों का संक्षिप्त में मैंने इस पुस्तक में विवेचन किया है।

मैंने इस पुस्तक में कितने ही श्लोकों पर विज्ञान सिद्ध, प्रयोग सिद्ध तथा व्यवहारिक मीमाँसा की है।

आशा है, विचारशील धर्म प्रेमी वाचक वृन्द इस पुस्तक से योग्य प्रेरणा लेकर अपना बहुमूल्य जीवन सफल बनायेंगे।

विद्याशंकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

प्रथम अध्याय

धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पांडवाश्चैव किम कुर्वत संजय ॥

वैज्ञानिक मीमांसा

यहां पर एक बात स्पष्ट होती है कि आज तक जितने भी महापुरुषों ने तथा विद्वानों ने इस महान् ग्रंथ का भाषांतर किया है उन्होंने इस महत्वपूर्ण श्लोक के प्रथम पद पर जो आवश्यक प्रकाश डालना चाहिये था वह नहीं डाला। परिणाम यह हुआ कि धर्म शब्द का सत्य स्वरूप सर्व साधारण धर्म प्रेमी भाइयों को समझना मुश्किल हो गया। प्रश्न यह है कि, "धर्मक्षेत्रे" और "कुरु क्षेत्रे" इन दो पदों में से "धर्मक्षेत्रे" पद को ही प्रथम स्थान क्यों दिया गया? कुरुक्षेत्रे-धर्मक्षेत्रे ऐसा क्यों नहीं लिखा गया? कौन सा कारण था? ऐसा एक प्रश्न बुद्धिपरायण गीता प्रेमियों के मस्तिष्क में उपरोक्त श्लोक पढ़ते ही उत्पन्न हो सकता है। अर्थात् "धर्मक्षेत्रे" इस पद को प्रथम स्थान देने में अवश्य कुछ विशेषता होनी चाहिये। अब इस पद के अर्थ का वास्तविक स्पष्टीकरण मैं वाचक वृन्द के सम्मुख रखकर इसके गंभीरता का विवेचन प्रस्तुत करता हूं।

धर्म प्रेमी भाइयो, जरा आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो धर्म ही हमारे जीवन का आधार है। धर्म ही हमारा मार्गदर्शक है! जिस प्रकार व्यवसाय की दृष्टि से हमारा भारतवर्ष कृषि प्रधान है, ठीक उसी प्रकार विचार और भावना की दृष्टि से हमारा देश धर्म प्रधान भी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया धर्म पर ही आधारित है। बाहर पर्यटन के लिये जाना हो, नवीन वस्त्र धारण करना हो, नवीन गृह में प्रवेश करना हो, नवीन व्यवसाय प्रारंभ करना हो, इत्यादि। तात्पर्यः— उठते बैठते सोते जागते हम धर्म का ही आधार लेते हैं। धर्म के कारण अपने प्राणों का बलिदान देने वाला अगर कोई देश है तो हमारा भारत-वर्ष ही है। चौदह चौदह वर्ष के कोमल बालक जीवित दीवार में चुन दिये गये, धर्म के कारण महाराजा हरिश्चन्द्र ने अपना संपूर्ण राज्य दान कर अपना परिवार व स्वयं को भी धर्म की वेदी पर कुरबान कर दिया। धर्म के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी चौदह वर्ष बनवास चले गये ! धर्म के कारण महारथी कर्ण ने अपने कवच कुंडलों का दान देकर मृत्यु से सम्बन्ध जोड़ लिया ! धर्म के कारण भगवती सीता माता को गर्भावस्था में बनवास जाना पड़ा ! और धर्म के ही कारण मेवाड़ की वीर भूमि पर सोलह हजार राजपूत रमणियों ने एक साथ अग्निस्नान किया।

मेरे धर्म प्रेमी विद्वान् भाइयों, यहां धर्मशास्त्र के आधार पर प्रश्न उपस्थित होता है कि धर्म हमें मारने वाला है या जीवित रखने वाला ? धर्म हमारा रक्षक है या भक्षक ? क्या धर्म मानव रक्त का प्यासा है ? मेरे भाइयो, धर्म तो मानव मात्र को जीवित रखने वाली संजीवनी है ! जो धर्म मनुष्य के खून का प्यासा हो वह तीन काल धर्म सिद्ध नहीं हो सकता। धर्म हमारा उत्साह बढ़ाता है, धर्म हमारी रक्षा करता है, धर्म हमें सुखी बनाता है और धर्म हमें शान्ति देता है। परंतु वर्तमान में हम जिसे धर्म समझ बैठे हैं, उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह धर्म हमें कायर बना रहा है, यह धर्म तो धर्म प्रेमियों का ही बलिदान मांग रहा है, इस लिये मानवता का प्रश्न है कि धर्म यानि क्या ?

वाचक वृन्द, वास्तविक बात तो यह है कि, धर्म का यथार्थ स्वरूप समझाने में आया ही नहीं। आज कल के धर्माचारियों ने, विद्वानों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने, साहित्यकारों ने धर्म शब्द का मनमाना ही अर्थ जनता के सम्मुख रखा। आज भारतवर्ष में जो जाति-द्वेष, मत-भेद, पंथ-भेद दिखाई देते हैं उनका प्रथम कारण आज का धर्म ही है, और इसी धर्म ने अपने भारतवर्ष में अशान्ति निर्माण की है—अपने थे वह पराये हो गये हैं और भाई भाई के शत्रु बन बैठे हैं।

पु॰सं॰ 1607

प्यारे भाइयो, वर्तमान काल में सम्प्रदायवादियों ने धर्म का वास्तविक स्वरूप ही नष्ट कर दिया है। परिणाम यह हुआ कि वही धर्म आज हमें नष्ट कर रहा है। ऐसी दशा में धर्म का वास्तविक तथा व्यवहारिक स्वरूप समझने की आज नितांत आवश्यकता है। जिस प्रकार किसी बालक को देखते ही इस बालक की जन्मदात्री माता होनी ही चाहिये ऐसा निष्कर्ष निकलता है। ठीक उसी प्रकार संस्कृत साहित्य में प्रत्येक शब्द की माता होती है! कौन सा शब्द किस धातु से बना है, इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है! "धातु" ही शब्दों की माता है। इस दृष्टि से धर्म शब्द किस "धातु" से बना है यह समझ में आते ही संपूर्ण अनर्थों का एक क्षण में अंत हो जायगा।

धर्म शब्द "धृ धारणे" इस धातु से बना है! अर्थात् क्या धारण करने से धर्म सिद्ध होता है? (१) सत्य को धारण करना (२) यथार्थ ज्ञान धारण करना (३) नीति और त्याग को धारण करना (४) तथा शुद्ध चारित्र्य धारण करना (५) मानवता के अनुसार उपरोक्त गुणयुक्त आचरण करना-कराना (६) चक्रवर्ती साम्राज्य पद धारण करना (७) और मोक्ष को अर्थात् परम सुख को धारण करना। उपरोक्त सात व्यवस्थाओं को धारण करना ही सत्य धर्म है।

अब वर्तमान समय में धर्म का जो अर्थ करने में आया है, उसका भी अवलोकन कीजिये! ताकि आपको ज्ञात हो जायगा कि सही धर्म से हम कितने दूर हो गये हैं! यह देखिए आज का धर्मः—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शौच से निवृत्त होने के बाद हाथ पाँव धोना, महिने में दो चार वार भूखों रहना, तीर्थं यात्रा में जाकर नदी में डुवकी लगाना, जीवित माता पिता की श्रद्घा पूर्वक सेवा छोड़कर मृतक श्राद्घ करना आदि आदि । यदि इसी को धर्म कहा जाय तो धर्म शव्द की महानता ही नष्ट हो जाती है । यह तो धर्म शव्द के साथ विश्वासघात है । अज्ञानता की परिसीमा है ! सत्य को छोड़कर असत्य को धारण करना है ।

तात्पर्य:—अपने आपको धोखा देना है ।

मनुष्य जीवन के चार फल हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इनमें धर्म ही आधार शिला के रूप में अवस्थित है अतः इनमें धर्म शव्द को ही प्रथम स्थान दिया है । इसी से यह सिद्घ होता है कि, धर्म शव्द में अवश्य कोई रहस्य या गूढ़ार्थं समाया हुआ है । और इस गूढ़ार्थं को समझने के लिये हमको ऋषि मुनियों के युग में ही प्रवेश करना चाहिये । उसके विना धर्म का यथार्थं स्वरूप तीन काल में भी हमारे समझ में नहीं आ सकता । यह देखिये ऋषि मुनियों की वास्तविक और व्यावहारिक व्यवस्था:—

महर्षि कणाद जिन्होंने खेतों में वचा हुआ कण कण खाकर अपना तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए वैशेषिक दर्शन शाखा की रचना की ! उन्होंने धर्म की व्याख्या इस प्रकार की है:—

यतो ऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः स धर्मं ।।

अर्थात्: जिस में भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति हो उसी का नाम धर्म । यह है धर्म का स्पष्ट तथा वास्तविक स्वरूप । अव इस व्यवस्था को समझने के लिये हम थोड़े प्रयत्नशील बने । सर्व प्रथम हम भौतिक प्रगति पर विचार करें ! भौतिक प्रगति यानी ? वर्तमान समय में भौतिक प्रगति के विषय में अपूर्ण विचार धारा ही गतिमान हो रही है, और वह निम्न साधनों से सिद्घ हो रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। नये नये आविष्कारों का निर्माणः—जैसे मोटर, विमान, रेलगाड़ी, ग्रामोफोन, रेडियो, सिनेमा तथा अनेक प्रकार के इन्जेक्शन आदि आदि। यह है आज की प्रगति ?

मेरे विद्वान् भाइयो, उपरोक्त साधनों से भौतिक प्रगति सिद्ध नहीं हो सकती ! इससे तो अधोगति ही सिद्ध होती है। भौतिक प्रगति के इन साधनों ने मानवीय जीवन को निर्बल और अल्पायुषी बना दिया है। अब ऋषि सिद्धान्तों के अनुसार भौतिक प्रगति को देख लें और विचार करें। सर्व प्रथम यह ध्यान में रहे कि वेदशास्त्र ऋषियों की वाणी का आधार है। उन्होंने अभ्युदय जिस रूप में स्वीकार किया है उसका प्रमाण यह है:—

ॐ स्तुतामया वरदा वेद माता प्रचोदयान्तो पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्म वर्चसं मह्यं दत्वा व्रजते ब्रह्म लोकम् ॥

(१) आयुष्य (२) प्राण (३) प्रजा (४) पशु (५) कीर्ति (६) धन (७) ब्रह्मवर्चस

उपरोक्त सात व्यवस्थाओं की सिद्धि न हो तब तक भौतिक प्रगति सिद्ध नहीं हो सकती। इन में से एक भी वस्तु की कमी हो उतना ही भौतिक प्रगति का अभाव सिद्ध होगा।

भावार्थ यह है कि, मानव जीवन दीर्घायुषी हो, मानव जीवन प्राण वान हो, मानव जीवन में उत्तम संतान हो, मानव जीवन में पशु धन हो, मानव जीवन में उत्तम कीर्ति हो, मानव जीवन में लक्ष्मी हो, और मानव जीवन में ब्रह्म विद्या का संपादन हो। वर्तमान समय में इन सात व्यवस्थाओं का दर्शन भी नहीं होता। दुनियाँ बहुत आगे बढ़ रही है, विज्ञान ने भी काफी मात्रा में प्रगति की है ! परंतु यह प्रगति सिनेमा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जलाशय देखने जैसी ही है। उस जलाशय के पास जाकर मनुष्य अपनी प्यास नहीं बुझा सकता।

प्रिय पाठक धर्म तो इतनी सरल और व्यावहारिक व्यवस्था है, कि जब धर्म का सत्य स्वरूप हमारे सम्मुख आता है तो चिंता का स्थान ही नष्ट हो जाता है। दुःख तो केवल इस बात का है कि बिलकुल सीधे साधे विषय को आज के सांप्रदायिक तत्वों ने इतना बिगाड़कर जनता के सम्मुख रख दिया है कि उसका सुधार करना भी महा कठिन हो गया है। यह देखिये, मानव धर्म शास्त्र के घड़वैया मनु महाराज धर्म के अर्थ में कितनी सुंदर व्यवस्था लिखते हैः—

वेदस्मृति सदाचार स्वस्यच प्रियमात्मन :
एतत् चतुर्विध प्राहु : साक्षात् धर्मस्य लक्षणम् ॥

अर्थात्ः—वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी आत्मा को जो प्रिय यानी सत्य के अनुकूल आचरण, यह धर्म के चार लक्षण हैं।

मनु महाराज ने धर्म के जो चार लक्षण बताये हैं उन में आपको किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं हो सकती। कितनी सुन्दर व आचरण करने योग्य व्यवस्था! उपरोक्त मनु महाराज की व्यवस्था पर निष्पक्ष रूप से विचार किया जाय, तो हमको एक ही निर्णय पर आना पड़ेगा कि—सत्य, सदाचार, प्रामाणिकता और प्रेम इन चार सद्गुणों के अनुसार चलना ही वास्तविक धर्म है।

उपरोक्त चार गुण जिस मनुष्य में हों, वही धार्मिकता का दावा कर सकता है, और यही धर्म का सच्चा स्वरूप है। जो भी भाई या बहिन इन चार लक्षण युक्त धर्म का पालन करेंगे, निःसंदेह वह सद्गति प्राप्त होंगे। इसमें शंका के लिये कोई स्थान नहीं है। जिसके पास सत्यवाणी है, जिसका जीवन सदाचारी है, जिसके जीवन में प्रामाणि-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

कता है और जिसका जीवन प्रेम से ओत-प्रोत है, वही मनुष्य धर्मप्राण
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुरुष है—सच्चा ज्ञानी विज्ञानी तथा ईश्वर भक्त है।

अब हम धर्म के प्रकार पर विचार करें—देखिए, धर्म के दो प्रकार हैं (१) शुद्ध धर्म और (२) आपद् धर्म। भारतवर्ष के ऋषि मुनियों ने इस कल्याणकारी विषय पर संपूर्ण तथा वास्तविक मीमांसा की है। क्योंकि वे यह अच्छी तरह से जानते थे कि सत्य के तीन प्रकार हैं:—पहला पक्षपाती सत्य, दूसरा अर्ध सत्य, और तीसरा संपूर्ण सत्य। सत्य के इन तीन प्रकारों में से उन्होंने अपने कथन में अर्थात् शास्त्रों में पक्ष-पाती सत्य या अर्ध सत्य की कभी भी चर्चा नहीं की। यही एक प्रमाण है कि विश्व के समस्त विद्वानों ने ऋषियों की विचार धारा का वैज्ञानिक दृष्टि से परीक्षण करने के पश्चात ही समर्थन किया है!

आपद् धर्म यानी संकट समय में खींचने वाली जंजीर! आपद् धर्म यानी अपवाद! जहाँ नियम हों वहां अपवाद भी होता है। और अपवाद कभी-कभी नियम से भी बलवान सिद्ध होता है। इसलिये अपवाद मानव जीवन में किंचित् ही आता है। यदि अपवाद का अधिक उपयोग किया जाय तो सर्वनाश हो जाएगा। फिर भी अपवाद को दूर नहीं किया जा सकता। किसी-किसी समय तो अपवाद जीवन दाता सिद्ध हो जाता है।

हमारे धर्म शास्त्र में जहाँ-जहाँ शुद्ध धर्म की चर्चा हुई है, वहां-वहां आपद् धर्म का भी संकेत करने में आया है। क्योंकि, शुद्ध धर्म की रक्षा के लिए कभीं-कभी आपद् धर्म का ही उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। ऐसे सैंकड़ों प्रमाण हमारे धर्म शास्त्र में विद्यमान हैं। उदाहरण के रूप में महाभारत की एक घटना आपके सम्मुख रखता हूँ। जिस युद्ध स्थल में महारथी कर्ण अपने शस्त्र भूमि पर रखकर अपने रथ को संवारता है, ठीक उसी समय का लाभ उठाकर भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को कहते है—"हे पार्थ कर्ण को मारने के लिये यही समय उचित है, उठा धनुष और मार दे इस कर्ण को।" भगवान श्री कृष्ण के वचन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनकर अर्जुन ने कहा—हे भगवन, कर्ण के हाथों में शस्त्र नहीं हैं, ऐसी अवस्था में उस पर प्रहार करना धर्म युद्ध के विरुद्ध है, मैं अपने क्षत्रिय धर्म को छोड़कर एक निःशस्त्र योद्धा के साथ किस प्रकार युद्ध करूं ? ऐसा करने से मेरे शौर्य को लांछन लग जाएगा ? इसलिए हे भगवान ऐसी दशा में मैं कर्ण के ऊपर प्रहार नहीं कर सकता। अर्जुन की बात सुनकर भगवान श्री कृष्ण ने कहा—हे अर्जुन तेरा कहना ठीक तो है परंतु तू केवल शुद्ध धर्म का ही विचार करता है। युद्ध के मैदान में केवल शुद्ध धर्म का ही विचार करना ठीक नहीं। यहाँ पर तो तुझे आपत् धर्म का ही आधार लेना आवश्यक है! उसी आपत् धर्म के आधार पर मैं तुझे कहता हूँ कि उठा शस्त्र और इस कर्ण को सदा के लिए समाप्त कर दे। हे पार्थ, अधर्म का पक्ष लेने वाले को मारना ही परम धर्म है, और राष्ट्र का कल्याण भी है! धर्म और अधर्म को मैं पूर्ण रूप से जानता हूँ। इस लिये विलंब न कर, ऐसा समय फिर नहीं आयेगा। अर्जुन भी एक योग्य तथा अधिकारी पुरुष था, भगवान कृष्ण की आज्ञा मानकर कर्ण के ऊपर भीषण प्रहार किया और उस महारथी कर्ण को सदा के लिये समर भूमि पर सुला दिया। ऐसा ही एक आपत् धर्म का उदाहरण छांदोग्य उपनिषद् में आया है।

महर्षि चाक्रायण और उनकी पत्नी को दुष्काल के कारण कई दिनों तक भोजन नहीं मिला था! क्षुधा से वे व्याकुल हो गये थे कि भोजन के बिना उनके प्राण जाने की संभावना थी। वे दोनों पति-पत्नी अन्न की खोज में जंगलों में भटक रहे थे। भटकते-भटकते एक झोंपड़ी उन्होंने देखी, उस झोंपड़ी के पास कुछ शूद्र लोग भोजन कर रहे थे। उनके पास जाकर महर्षि चाक्रायण ने कहा—भाइयो, हम दोनों बहुत भूखे हैं, यदि आप लोग अपने भोजन में से थोड़ा भोजन हमें भी दोगे तो हमारे प्राण बच जायेंगे। उस महा तपस्वी चाक्रायण के वचन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुन कर उन शूद्रों ने कहा—'हे ब्राह्मण देवता भोजन तो हमारे पास है, और आपको दे भी सकते हैं ! परंतु हमारे पास जो भोजन है वह इसी पात्र में है जिसमें हम भोजन कर रहे हैं। अर्थात् इस पात्र में हमारा झूठा भोजन है। दूसरे हम लोग शूद्र हैं। महर्षि चाक्रायण ने कहा—मैंने तुमसे भोजन मांगा है तुम्हारी जाति नहीं पूछी ! आपत् धर्म के आधार पर हम तुम्हारा झूठा भोजन सेवन कर सकते हैं। इसमें धर्म की कुछ भी हानि नहीं हैं। शूद्रों ने उसी समय अपना झूठा भोजन महर्षि चाक्रायण को दे दिया। महर्षि चाक्रायण और उनकी पत्नी ने उस झूठे भोजन से अपनी क्षुधा शांत की। परंतु जब जलपान का समय आया और उन शूद्रों ने एक पात्र में जल लाकर महर्षि को दिया। तब महर्षि चाक्रायण बोले—हे शूद्रों तुम्हारे हाथ का जल पीकर हम धर्म भ्रष्ट नहीं हो सकते। महर्षि के वचन सुनकर वहां के शूद्र लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा—हमारा झूठा भोजन आपने सेवन किया तब आपका धर्म भ्रष्ट नहीं हुआ और हमारे हाथ का पानी पीकर आपका धर्म भ्रष्ट हो जायगा यह हमारी समझ में नहीं आता। महर्षि चाक्रायण ब्रह्म विद्या के प्रकांड विद्वान् थे। उन्होंने गंभीरता पूर्वक कहा कि हे शूद्र लोगों तुम्हारा झूठा भोजन हमने आपत् धर्म के आधार पर सेवन किया है जल तो सर्वत्र प्राप्य है, हम किसी भी जलाशय के पास जाकर स्वच्छ जल पीकर अपनी तृष्णा शांत कर सकते हैं ! इस समय भोजन हमारे लिए अप्राप्य था। इस लिए हमने उसे ग्रहण किया परंतु हम आपका जल नहीं पीं सकते। इस प्रकार आपत् धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाकर तपस्वी चाक्रायण अपनी पत्नी सहित वहां से चले गये।

(छा० प्रपा० १ खण्ड १० प्रवाक ।।)

प्यारे भाइयो, छांदोग्य उपनिषद का उदाहरण शुद्ध धर्म और आपत् धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाता है। शुद्ध धर्म और अपात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धर्म का शुद्ध स्वरूप समझने की हमें अति आवश्यकता है। केवल शुद्ध धर्म का पालन करने से मानव समाज जी नहीं सकता। प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते है। उसी प्रकार मानव मात्र को जीवित रहने के लिये शुद्ध धर्म और आपत् धर्म की दोनों आवश्यकता है। किसी भी अवस्था में हम आपत् धर्म की उपेक्षा नहीं कर सकते। आपत् धर्म जीवन में हम आपत् धर्म की उपेक्षा नहीं कर सकते। आपत् धर्म मानव जीवन के सामाजिक राजकीय और धार्मिक तीनों क्षेत्रों में रमता है। यह देखिए, अथर्ववेद में कितनी बेथक और विधायक व्यवस्था दी है:—

ऋतस्य पन्थामनुतिरभा आगुस्त्रयो धर्मानुरेत आगुः।
प्रजामेका जिन्वत्युर्जमेका राष्ट्रमेका रक्षति देवयूनाम्॥

(अथर्व०–८–१-२३)

आपत् धर्म की तीन व्यवस्थायें हैं, इन तीन अवस्थाओं को अनुधर्मा कहते हैं।

(१) बल की रक्षा (२) प्रजा की रक्षा और (३) समग्र राष्ट्र की रक्षा अनुधर्मा के आधार से ही होती है।

मेरे देश प्रेमी भाइयो, भारतीय जनता को केवल शुद्ध धर्म का उपदेश देने में आया है। जिसका पालन करना प्रत्येक अवस्था में ठीक नहीं हो पाता। और आपत् धर्म का वास्तविक उपदेश तो कोई भी संप्रदायियों ने या मिथ्याभिमानी आचार्यों ने दिया ही नहीं। परिणाम यह हुआ कि हमारा भारतवर्ष निष्प्राण और निर्बल हो गया है—हो रहा है। यदि भारतीय जनता को धर्म के ठेकेदारों ने शुद्ध धर्म के साथ-साथ आपत् धर्म का भी उपदेश दिया होता तो इस मातृभूमि के जो दो टुकड़े हुये हैं, वे कभी भी न होते। आज की भारतीय जनता निर्बल, निर्धन तथा निष्प्राण होती जा रही है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष के स्वाभिमानी भाइयो, निर्बल को बलवान और कायरों को कर्मवीर वनाने वाला यदि कोई है तो मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि श्री भगवद्गीता के गायक और नायक भगवान श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण। यही श्री भगवद्गीता का वास्तविक उपदेश है।

सुज्ञेषुकिम् बहुना। अस्तु।

प्रथम अध्याय का ४१ वां श्लोक

अधर्माभिभवात् कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः॥

अर्थः—अधर्म अधिक होने से कुलवान स्त्रियाँ दूषित होती हैं, और स्त्रियाँ दूषित होने से उनकी संतान वर्णसंकर निर्माण होती हैं, जो धर्म और कर्म का नाश करने वाली होती हैं।

वैज्ञानिक मीमांसा

उपरोक्त श्लोक में नारी जाति की पवित्रता के रक्षण के विषय में बहुत ही मार्मिक संकेत करने में आया है। भारतीय संस्कृति के प्रखर ज्योतिर्धरों ने नारी जाति की पवित्रता शुद्धता पर जितना सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया है उतना सूक्ष्म विचार शायद ही इस जगत में किसी महापुरुष ने किया हो ? आप इस विश्व के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं वता सकते जहाँ किसी बालक को पिता ने जन्म दिया हो। अरे भाई, पुत्र को जन्म देने वाली तो माता ही होती है। माता के ही गर्भ में वालक नौ मास तक शयन करता है। तो फिर जिस माता के गर्भ में बालक की देह तैयार होती है, उस माता की पवित्रता की रक्षा के लिये ऋषि मुनियों ने नारी जाति पर जो बंधन लगाए हैं उस में आश्चर्य की कौनसी बात है ? माता का आहार विहार-विचार-नीति-रीति-चाल चलन और स्वभाव जैसा होगा, वैसा ही संस्कार गर्भस्थ बालक पर होता है। गर्भ में पड़े हुये संस्कार बहुत ही बलवान होते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। माता जिस प्रकार का पुत्र निर्माण करना चाहे वैसा ही पुत्र अपने विचार प्रावल्य से निर्माण कर सकती है। मेरे इस कथन का इतिहास साक्षी है, वीर अभिमन्यु, छत्रपति शिवाजी, प्रिन्स विस्मार्क नेपोलियन इत्यादि महापुरुषों के जीवन में उनकी माताओं ने अपने विचार प्रावल्य से गर्भावस्था में ही क्रांति की ज्योति जलाई थी। यह मानस शास्त्र का प्रमाण है।

नारी जाति का पावित्र्य तथा चारित्र्य नष्ट हो जाय—दूषित हो जाय तो उनसे होने वाली संतान वर्णसंकर ही होगी इन में संदेह नहीं। इसीलिये नारी जाति के पावित्र्य पर अधिक से अधिक लक्ष्य देने में आया है। माता संपूर्ण जगत की आधारशिला है। शास्त्राकार लिखते हैं:— माता निर्माता भवति जो निर्माण करती है वही माता है।

जव परमात्मा ने नारी जाति को ही माता का पद अर्पण किया है, तब हमारे भारतीय संस्कृति के महानुभावों ने नारी जाति की पवित्रता के रक्षणार्थ जो नियम तथा वंधन बनाये हैं उसमें अनुचित क्या है?

आज का सुशिक्षित वर्ग कहता है कि हिंदू धर्म के शास्त्रकारों ने नारी जाति पर वड़ा अन्याय किया है! नारी जाति को हिंदू धर्म ने पीस डाला है, और वहुत ही अपमानित किया है! हिंदू धर्म पक्षपाती धर्म है। ऐसा बहुत से सुशिक्षित विद्वानों का कहना है। मेरा विश्वास है कि उपरोक्त कथन से उनका समाधान हो ही जाएगा। नारी जाति के पवित्रता की अनिवार्य आवश्यकता मैंने मानस शास्त्र की दृष्टि से बताई, अब विज्ञान की दृष्टि से आपके सम्मुख रखता हूँ।

वैज्ञानिकों ने यह नियम सिद्ध किया है कि :—

Electricity travels from one body to another.

अर्थात् विद्युत शक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान को गमन करती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वी से सूर्य साधारणतया सवा नौ करोड़ मील दूर है। फिर भी सूर्योदय होते ही उसकी किरणें पृथ्वी पर देखते-देखते आ जाती हैं, क्योंकि उपरोक्त विज्ञान का नियम है। अब जो अग्नि तत्व सूर्य के कारण ब्रह्मांड में है, वही अग्नि तत्व अपने पिंड में भी विद्यमान हैं। मानव शरीर में चार स्थानों में उपरोक्त सूर्य तत्व रहता है। वह तत्व (१) मुख में, (२) नेत्रों में, (३) जठर में और (४) रक्त में है।

अब यह स्मरण रहे कि, मानव शरीर का रक्त उसी रंग से रंगा हुआ होता है जिस विचार का मनुष्य होता है। कोई व्यक्ति यदि विकारी तथा विषय वासना का ही ध्यान करता हो तो उसका रक्त भी विकारी तथा विषय वासना से ही रंगा हुआ होता है। अब रक्त में जो गर्मी (प्राण शक्ति) है, वह प्राण शक्ति प्रति क्षण चमड़ी के छिद्रों द्वारा बाहर फेंकी जाती है जो बाहर के वातावरण को दूषित करती है। अब आप विचार करें कि कोई साधू या संन्यासी विकारी विचार का हो, तो उपरोक्त नियम के अनुसार उसका रक्त भी विकारी विचार से रंगा हुआ होगा। साधू संन्यासियों के चरण स्पर्श करने की हम लोगों में प्रथा है, विशेष करके यह प्रथा हमारे नारी वर्ग में अधिक मात्रा में देखी जाती है।

अब पाठक वर्ग विचार करें कि एक साधू विकारी विचार का है, और उसका चरण स्पर्श करने वाली स्त्री कुलीन तथा निष्पाप है, अब वह निष्पाप नारी उस विकारी विचारों के साधू का चरण स्पर्श करती है, तो क्या होगा? उस दूषित विचार के साधू का चरण स्पर्श करते ही उसी समय उस साधू के दूषित विचार जो चमड़ी के द्वारा बाहर फेंके जाते हैं वह उसी क्षण उस निष्पाप स्त्री के शरीर में प्रवेश कर जायेंगे। परिणाम यह होगा कि स्त्री पवित्र निष्पाप और निर्दोष होते हुए भी कभी न कभी विकारी विचारों की शिकार बन जायगी। विज्ञान का नियम बताता हैं कि चरण स्पर्श की प्रथा कुप्रथा है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस हस्त स्पर्श की कुप्रथा से हमारा भावुक स्त्री वर्ग उपरोक्त वैज्ञानिक नियम के आधार से दूषित सिद्ध होता है। निष्पाप और पवित्र होते हुए भी ईश्वरीय नियम के आधार से सूक्ष्म दृष्टि से दूषित बना हुआ स्त्री वर्ग वर्णसंकर संतानों को ही जन्म देता है। नारी जाति के लिये; उनके पवित्रता के लिये तथा उनके चारित्र्य रक्षणार्थ हमारे ऋषि मुनियों ने जो नियम सृष्टि विज्ञान की दृष्टि से बनाये हैं वे योग्य हैं या अयोग्य हैं इसका वाचक वृन्द स्वयं निर्णय करें।

प्यारे भाइयों, भारतीय संस्कृति के महान तपस्वियों ने छोटी से छोटी बात पर भी कितना वेधक प्रकाश डाला है यह निम्न लिखित बातों से आपके ध्यान में आ जायगा :—

हमारे विद्यार्थी जब तक ब्रह्मचारी अवस्था में रहते हैं, तब तक उनको स्त्री के हाथ से बना हुआ भोजन ग्रहण करने की आज्ञा नहीं थी।

कारण भोजन बनाने वाली स्त्री यदि दुष्टा हो, तो उसके दुष्ट विचार उपरोक्त वैज्ञानिक नियम के अनुसार उस भोजन में प्रवेश करेंगे, और उस भोजन को जो विद्यार्थी सेवन करेगा वह ब्रह्मचारी विद्यार्थी मानसिक दृष्टि से ब्रह्मचर्य से भ्रष्ट हो जायगा।

मेरे विचारशील भाइयो, कितना सखोल तत्वज्ञान, कितनी सूक्ष्म-दृष्टि, और कितनी महान विचारों की गंभीरता ! मेरे भाइयो, भारतीय संस्कृति में तो हस्तांदोलन की भी प्रथा नहीं है ! कोई भी सज्जन या स्नेही मिले तो दोनों हाथ जोड़कर ही नमस्ते करना चाहिये। यहां पर कोई भाई शंका करें कि, परस्पर मिलने की प्रथा हिंदू धर्म में है उसका क्या ? उत्तर में निवेदन है कि, एक दूसरे को मिलने की प्रथा केवल समान कक्षा वालों के लिये ही प्रचलित है। एक दूसरे को स्पर्श करके मिलने की प्रथा सर्व साधारण का सामान्य नियम नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे भाई, भारतीय संस्कृति के अमर निर्माताओं एवं अजोड़ तथा धुरंधर धर्म के धारा शास्त्रियों ने तो इतने सूक्ष्म नियम बनाये हैं कि, एक आसन पर माता और पुत्र भी नहीं बैठ सकते, अधिक क्या लिखूं ?

मेरे धर्म प्रेमी सज्जनों, नारी जाति तो हमारे धर्म की आधार-शिला एवं हिंदू संस्कृति और सभ्यता का प्राण है। इसीलिये श्री भगवद्गीता हमें उपदेश देती है कि हे मनुष्यों, स्त्री दूषित होने से वर्ण-संकर प्रजा निर्माण होती है, और वह वर्णसंकर प्रजा धर्म, कर्म, देश व जाति का नाश करने वाली होती है। अस्तु :

इतना ही इस गीता के श्लोक पर लिखना पर्याप्त है। पाठक स्वयं निर्णय करें और श्री भगवद्गीता की इस महत्ता को समझें।

अध्याय ३रा श्लोक १० वां

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥

अर्थः—परमात्मा ने कल्प के प्रारंभ में यज्ञ सहित प्रजाजनों को उत्पन्न करके कहा कि, इस यज्ञ द्वारा तुम सब को उन्नति प्राप्त हो। यह यज्ञ तुम्हारे समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाला होगा।

वैज्ञानिक मीमांसा

इस श्लोक के द्वारा भगवान श्री कृष्ण यज्ञ की महत्ता के प्रति मनुष्य मात्र को कितनी सुन्दर व्यवस्था दिखा रहे हैं।

आज का मानव यज्ञ का वास्तविक स्वरूप भूल गया है। हमारे ब्राह्मण देवताओं ने केवल यज्ञ का सत्य स्वरूप जनता को समझाया होता तो आज हमारी व हमारे देश की जो दुर्दशा हो गई है वह कदापि न होती। आप कहेंगे कैसे ? उत्तर में निवेदन है कि यज्ञ शब्द का सत्य तथा वास्तविक अर्थ जनता को समझाने में आया ही नहीं। यज्ञ का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अज्ञानता व अर्थहीन कपोल कल्पित दूषित बना हुआ अर्थ ही जनता के सन्मुख रखा गया। किसी ने यज्ञ का अर्थ विष्णुयाग किया, किसी ने रुद्रयाग किया, किसी ने चंडीयाग किया, केवल भौतिक दृष्टि से ही यज्ञों के अर्थ करने में आये हैं, इस मौलिक भूल का कारण केवल धात्वार्थ की अनभिज्ञता ही है। यदि कोई प्रामाणिक विद्वान् थोड़ा सा प्रयत्नशील होकर यज्ञ शब्द किस धातु से बना है इतना ही देख लेता तो इतना भयंकर अनर्थ न होता। यह देखिये यज्ञ का सत्य तथा वास्तविक अर्थ :—

यज्ञ शब्द "यज" धातु से बना है, और 'यज' धातु के तीन अर्थ होते हैं, (१) पूजा (१) दान और (३) संगतिकरण। इन तीनों अर्थों में महत्व का अर्थ है संगतिकरण, अर्थात् संघठन। कोई भी जाति जातीयता की भावना बिना जी नहीं सकती। और जातीयता की भावना को पुष्ट करने वाला यदि कोई विचार है तो वह संघठन ही है। किसी भी जाति के पास यदि संघठन न हो, तो वह जाति नामशेष हो जाती है, और दूसरों की गुलाम हो जाती है।

आज हमारी हिंदू जाति अपना संघठन गवां बैठी है। सैंकड़ों संप्रदाय, अनेक भगवान, सैंकड़ों मान्यतायें, हजारों मन्दिर और लाखों देवी देवताओं ने हिंदू जाति के टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं। अनेक विचार धाराओं में जकड़ी हुई और विभाजित हुई हिंदू जाति अपनी सघठन शक्ति खो बैठी है, तथा निष्प्राण, डरपोक और कायर बनती जा रही है, तथा इस कायरता का लाभ अन्य लोग दिन दहाड़े उठा रहे हैं। यह सब कुछ होते हुए देखते हुए भी हमारी हिन्दू जाति का रोम तक हिलता नहीं। क्या कारण है? उत्तर स्पष्ट है कि नाना प्रकार की सांप्रदायिक भावनाओं ने हिंदू जाति को निष्प्राण बना दिया है।

श्री भगवद् गीता पुकार-पुकार कर कह रही है कि हे मनुष्यों, तुम यज्ञ द्वारा उन्नति प्राप्त करो! परंतु दुःख के साथ लिख रहा हूँ कि, हम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ठीक गीता के विरुद्ध ही वर्तन कर रहे हैं। कहो, मेरे भाइयों, कैसे उद्धार हो ? हम सर पटक के मर भी जायं फिर भी भगवान हमारी सहायता नहीं करेगा। क्योंकि गीता हमारी वाणी में है, वर्त्तन में नहीं, क्या लाभ होगा ?

आपने कभी अन्य जाति में भी फुरसत से जाकर देखा है ? आप दुनिया की समस्त जातियों का धार्मिक और सांस्कृतिक अभ्यास करेंगे तो आपको यह ज्ञात हो जायगा कि उनके पास सर्वप्रथम धार्मिक संघठन है, और इसी कारण मैं उनको बलवान तथा प्राणवान जाति कहता हूँ। किसी भी जाति के संघठन की आधारभूत नींव उनके विचारों की एकता है, और विचारों की भिन्नता यानि उस जाति का शोकजनक अवसान।

आप थोड़ी देर के लिए मुस्लिम संसार पर दृष्टि डालकर देखिए :—

एक सुशिक्षित और एक अशिक्षित ऐसे दो मुस्लिम भाईयों से निम्न लिखित निष्पक्षता पूर्वक यह पाँच प्रश्न पूछिये कि :—

हे बिरादरे इस्लाम, (१) आपके धर्म का नाम क्या है ? (२) आप के धर्म ग्रन्थ का क्या नाम है ? (३) आपके ईश्वर का क्या नाम है ? (४) आपकी ईश्वर उपासना की पद्धति क्या है ? (५) और आपका धर्म नेता कौन है ? इन पाचों ही प्रश्नों का उत्तर दोनों ही मुस्लिम भाई एक जैसा ही देंगे। यह देखिए उनके उत्तर :—

(१) हमारे धर्म का नाम दीने इस्लाम (२) हमारे धर्म ग्रन्थ का नाम कुरआने शरीफ (३) हमारे ईश्वर का नाम अल्लाह (४) हमारी उपासना की पद्धति का नाम है नमाज और (५) हमारे धर्म नेता का नाम है मोहम्मद-अले-सलाम। अब यही पांच प्रश्न हमारे हिंदू भाई से पूछिए :—

(१) आपके धर्म का नाम क्या है ? एक कहेगा मेरे धर्म का नाम है वैष्णव धर्म ! दूसरा कहेगा मेरे धर्म का नाम है शैव धर्म ! तीसरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहेगा मेरे धर्म का नाम है स्वामी नारायण पंथ ! चौथा कहेगा मेरा धर्म वाम मार्गी है ! पांचवा कहेगा मेरा धर्म पुष्टीमार्गी है इत्यादि। प्रश्न दूसरा :—

(२) आपके धर्म ग्रंथ का क्या नाम है ? एक कहेगा रामायण ! दूसरा कहेगा शिव पुराण ! तीसरा कहेगा विष्णु पुराण ! चौथा कहेगा भगवती पुराण !पांचवा कहेगा ब्रह्म पुराण आदि । प्रश्न तीसरा-

(३) तुम्हारे ईश्वर का नाम क्या है ? एक कहेगा राम ! दूसरा कहेगा महादेव ! तीसरा कहेगा अंबाजी ! चौथा कहेगा भगवान कृष्ण ! पांचवाँ कहेगा नारायण आदि ! प्रश्न चौथा :—

(४) आपकी उपासना पद्धति का क्या नाम है ? एक कहेगा भक्ति योग ! दूसरा कहेगा ज्ञान योग ! तीसरा कहेगा कर्मयोग ! चौथा कहेगा राज योग ! पांचवा कहेगा हठयोग इत्यादि ! प्रश्न पांचवा :—

(५) आपका धर्म नेता कौन है ? पहला कहेगा शंकराचार्य ! दूसरा कहेगा वल्लभाचार्य ! तीसरा कहेगा माधवाचार्य । चौथा कहेगा कबीर साहेब ! पांचवा कहेगा सांईं बाबा !

मेरे भाइयों, बताइये, क्या तीन काल में भी हमारे हिंदू भाइयों में एकता आ सकती है ? इस दैवहीन जाति ने तो अपनी शक्ति का ही विभाजन कर डाला है। क्या त्रेता युग में अर्थात् रामायण काल में या द्वापर युग में अर्थात् महाभारत के समय में हमारी ऐसी दशा थी ? यदि नहीं, तो यह देखिए उपरोक्त पांचों प्रश्नों के शास्त्र शुद्ध उत्तर :—

प्रश्न :—(१) आपके धर्म का क्या नाम है ? उत्तर :—वैदिक अर्थात् सत्य धर्म ! जो सृष्टि काल से विद्यमान है। प्रश्न (२) आपके धर्म ग्रन्थ का क्या नाम है ? उत्तर :—वेद जो सर्व प्रथम हैं। प्रश्न (३) आपके ईश्वर का नाम क्या है ? उत्तर :—ओ३म् जिसकी समस्त ग्रन्थ स्तुति करते हैं। प्रश्न (४) आपकी उपासना की पद्धति का नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या है ? उत्तर :—संध्या, जो वेदानुकूल है। प्रश्न (५) आपका धर्म नेता कौन है ? उत्तर :—मानव शास्त्र के घड़वैया मनु महाराज।

इस प्रकार हमारे हिंदू धर्म का मजबूत संघठन है, परंतु इस भारत में अनेक संप्रदायों का जन्म होने से हिंदू भाई अपना स्थान ही भूल गये हैं, या यूं कहिये कि इन धर्म प्रेमी तथा भावुक हिंदू जाति को भुला दिया गया है। परिणाम यह हुआ कि, दुनिया की इतनी बड़ी भीड़ में मनुष्य अकेला हो गया। इसी लिये भगवान श्रीकृष्ण उपदेश देते हैं कि, हे मनुष्यों, तुम यज्ञ का व्यापक स्वरूप समझकर संघठित हो जाओ। अन्य कोई भी मार्ग तुम्हारे लिये उपयुक्त नहीं है।

अब हम यज्ञ के वैज्ञानिक अर्थ को समझने के लिये थोड़े प्रयत्नशील बनें।

बहुत से सुशिक्षित भाई कहते हैं कि, जहां-जहां बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया जाता है, वहां मनों घी आग में फेंक दिया जाता है ! यह केवल धन का दुरुपयोग है, हवन (यज्ञ) करके घी जैसी पौष्टिक वस्तु को आग में जला देना, इसकी अपेक्षा यह घी खाने के काम में लाया जाय, तो अधिक उपयुक्त हो सकता है।

वाचक वृन्द, यज्ञ कराने वाले हमारे पंडित तथा शास्त्री लोग क्या इस बात को नहीं जानते थे ? एक बात का स्मरण रहे कि घी सेवन करने से जितना फायदा नहीं होता उतना लाभ घी हवन में डालने से होता है, जो अधिक व्यापक तथा जनहितकारी है। घी हवन में डालने जितनी परोपकार की वैज्ञानिक भावना समाई हुई है उतनी घी खाने में नहीं है। आप मेरे इस वक्तव्य पर भरोसा नहीं करोगे, तो उत्तर में निवेदन है कि, घी सेवन करने से उसी व्यक्ति को लाभ हो सकता है जिसके जठर में सपूर्णतः घी का पचन हो जाय, और यदि जठराग्नि मंद हो तो जठर में गया हुआ घी पचेगा नहीं, तथा विषम असर करेगा। तात्पर्य खाया हुआ घी आप समझते उतना लाभ नहीं देता। आयुर्वेद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्र के मतानुसार जो खुराक पचती नहीं वह अजीर्ण पैदा करती है, और अजीर्ण समस्त व्याधियों का मूल है। आयुर्वेद के मर्मज्ञों ने यहां तक व्यवस्था दी है कि, अजीर्ण मृत्यु का एक कारण है।

उपरोक्त आयुर्वेद के कथन से यह बात सिद्ध होती है कि, जो खुराक पचती है वही गुणकारी है, न पचने वाली वस्तु कितनी ही स्वादिष्ट हो, उसे वर्ज्य ही कर देना चाहिये। इस एक ही आयुर्वेदानुकूल व्यवस्था से उपरोक्त सुशिक्षित समाज की दलील अर्थहीन हो जायगी।

अब हम यज्ञ में डाले हुए घी की परीक्षा करें :—

अग्नि में यह गुण है कि, कोई भी पदार्थ अग्नि देवता को अर्पण किया जाता है, तो अग्नि देवता उस पदार्थ के प्रत्येक अणु परमाणुओं को छिन्न भिन्न कर देती है, और धुएँ के रूप में बाहर फेंक देती है। इस धुएँ के अन्दर घी के सूक्ष्मतम गुण विद्यमान होते हैं, वह और धुआँ सांसों के साथ शरीर में प्रवेश करता है, अर्थात् शरीर में उसका शोषण होता है। इस प्रकार धुएँ के द्वारा घी के सम्पूर्ण गुण शरीर में जाकर रक्त को निर्दोष तथा मजबूत बनाते हैं। और रोग जन्तुओं का प्रतिकार करने की शक्ति रक्त में बढ़ती है अर्थात् रोगों से मनुष्य बच जाता है। तदुपरांत दूसरा एक फायदा और भी होता हैं, और वह फ़ायदा है वातावरण को शुद्ध करना, यानि वायु को शुद्ध करना। जितने प्राणी इस वायु के संसर्ग में आते हैं, उन सब को एक साथ एक जैसा ही लाभ होता है। घी में बनाया हुआ मिष्ठान्न आप अपने स्वजनों या इष्ट मित्रों को ही खिला सकते हैं। परतु उपरोक्त धुआँ आपके शत्रुओं के भी घर में प्रवेश करेगा। इस प्रकार हवन में डाला हुआ घी अधिक परोपकारी एवं अरोग्यवर्धक सिद्ध होता है। परोपकार की कितनी सत्य कल्पना लोक कल्याण का कितना सुन्दर तथा वैज्ञानिक विचार! इसी कारण भगवान श्रीकृष्ण यज्ञ की सर्वतोगामी प्रतिभा का वर्णन करते हुए अर्जुन को उपदेश देते हैं कि हे अर्जुन यज्ञ ही ईश्वर का स्वरूप है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखो श्री भगवद्गीता के तीसरे अध्याय के पन्द्रहवें श्लोक में यह स्पष्ट कहा है कि :—तस्मात् सर्वंगतं ब्रह्मनित्यं यज्ञे प्रतिष्ठित ।

अध्याय ५ वा श्लोक १८ वा

विद्याविनय संपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनी ।
शुनि चैवश्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः ॥

अर्थ :—विद्वान् तत्वज्ञानी, विद्या विनय संपन्न ब्राह्मण में, गाय में, हाथी में, श्वान में और चांडाल में समदृष्टि धारण करे ।

वैज्ञानिक मीमांसा

वहुत से गीता के अभ्यासी भाइयों ने उपरोक्त श्लोक का अनर्थ किया है । समदर्शिनः शब्द का वास्तविक अर्थ न समझने से जो आत्मा हमारे अन्दर है, वही आत्मा अन्य प्राणियों में भी निवास करती है, अर्थात् प्रत्येक प्राणी मात्र के साथ समान वर्तन करना चाहिये, इस प्रकार का उपदेश जनता को दिया । इस प्रकार का अर्थ भगवान श्री कृष्ण के वाणी के विरुद्ध है । कारण उपरोक्त श्लोक में आया है "समदर्शिन", समदर्शिनः का अर्थ है समान दृष्टि रखना । समान वर्तन की बात होती तो समवर्तिनः शब्द आया होता, परंतु ऐसा शब्द प्रयोग नहीं है । अर्थात् प्रत्येक प्राणी मात्र के साथ समान वर्तन करने का उपदेश भगवान श्री कृष्ण ने नहीं दिया है । समान वर्तन तो समान श्रेणी वालों के ही साथ हो सकता है । विद्वान-विद्वान के पास ही बैठ सकता है दुर्व्यसनी या दुराचारी के पास नहीं ।

विवेकी भाइयों यह बात ध्यान में रहे कि किसी भी शरीर में आत्मा हो, फिर वह मानव शरीर में हो या पशु देह में हो, उसको धिक्कारने का हमको कोई अधिकार नहीं है, समदर्शिनः का यही वास्तविक भाव है । किसी चांडाल का भी हम अपमान नहीं कर सकते । गाय, हाथी, श्वान आदि पशु योनियाँ हैं, उनके साथ हम भोजन नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

कर सकते। इसीलिए भगवान श्री कृष्ण उपदेश देते हैं कि, हे मनुष्यों,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम समदर्शी बनो और किसी का भी द्वेष मत करो। समवर्तन का तो भाव ही दूसरा है। अस्तु :—

उपरोक्त श्लोक के विषय में इतना ही लिखना प्रर्याप्त है।

अध्याय १० वां श्लोक २६ वां

अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम् ॥

अर्थ :—सर्व वृक्षों में हे अर्जुन, मैं पीपल हूँ।

वैज्ञानिक मीमांसा

श्री भगवद्गीता के जितने भी भाष्य अभी तक प्रकाशित हुए हैं, उन सभी भाष्यों में किसी भी लेखक ने पीपल का महत्व नहीं बताया। केवल भगवान श्री कृष्ण की वाणी है, इसलिए आंखें बन्द करके मान लेना।

मेरे विद्वान भाइयों, संसार में अनेक प्रकार के वृक्ष हैं उन में से भगवान श्री कृष्ण ने पीपल के वृक्ष को ही क्यों पसंद किया? आम्र वृक्ष वगैरह क्यों नहीं पसंद किये? नीम को क्यों नहीं पसंद किया? नीम तो बहुत ही गुणकारी है, आयुर्वेद में तो हजारों गुण युक्त वनस्पतियों के नाम आये हैं, तो फिर पीपल को ही भगवान श्री कृष्ण ने क्यों पसंद किया?

मेरे भाइयों, पीपल के वृक्ष में भगवान श्री कृष्ण ने एक ईश्वर निर्मित वैज्ञानिक झलक बताई है। जिसका समर्थन वर्तमान युग के बड़े-बड़े पाश्चिमात्य वैज्ञानिकों ने भी किया है।

वैज्ञानिकों ने यह बात सिद्ध की है कि, प्रत्येक वृक्ष सूर्य के प्रकाश में प्राण वायु देते हैं, और सूर्यास्त होते ही समस्त वृक्ष प्राण वायु देना बन्द कर देते हैं और विषैली वायु देते हैं। यह नियम है, अब यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

बात उतनी ही सत्य है कि जहां-जहां नियम होता है, वहां-वहां अपवाद
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी होता है। वैज्ञानिकों के मतानुसार सूर्य के प्रकाश में सर्व वृक्ष प्राण वायु देते हैं यह नियम हुआ। अब अपवाद की दृष्टि से ऐसा कौनसा वृक्ष है जो रात्रि में भी प्राण वायु देता हो ? विश्व के समस्त वृक्ष में पीपल का ही वृक्ष ऐसा है जो चौबीसों घंटे दिन में, व रात में हमें प्राण वायु ही देता है। इसी कारण भगवान श्री कृष्ण उपदेश देते हैं कि, हे अर्जुन सर्व वृक्षों में मैं पीपल हूँ।

गुरुवर्य रविंद्रनाथ टैगोर जब जर्मनी गये और वहाँ के विश्व विख्यात पुस्तकालय में गये तो वहां उन्होंने देखा कि, एक सुन्दर अलमारी में केवल एक ही पुस्तक बहुत ही शानदार स्थिति में रखी हुई थी। और उस आलमारी के ऊपर लिखा हुआ था :—

समस्त विश्व का ज्ञान विज्ञान का अमर व अजोड़ ग्रन्थ श्री भगवद् गीता।

कवि सम्राट गुरुवर्य रविन्द्रनाथ टैगोर को हंसना व रोना एक साथ आया। हंसना इस बात का था कि यह ग्रंथ मेरे देश का है, और रोना इस बात का था कि मेरे देश ने इस अमोल ग्रंथ की जो इज्जत करना चाहिये था वह नहीं की।

स्वामी विवेकानन्द जब अमेरिका गये तो वहां के पक्षपाती विद्वानों ने वहां के पुस्तकालय में श्री भगवद्गीता को सब के नीचे रखकर उस के ऊपर ईसाई मत की अन्य पुस्तकें रखकर सब के ऊपर बाइबिल रखा था। स्वामी विवेकानन्द जब वहां गये तो देखते ही मुस्कराकर बोले

"GOOD FOUNDATION."

मतलब नीचे की नींव (पाया) बहुत ही मजबूत तथा अचल है ! ऐसे श्री भगवद् गीता के विषय में कई उदाहरण पाये जाते हैं। पृष्ठ विस्तार के कारण यहां पर इतना ही पर्याप्त है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरे धर्म प्रेमी भाइयों, जहां जहां पीपल का वृक्ष होता है, वहां-वहां शुद्ध और प्राण वायु युक्त होता है। मानव शरीर को जीवित रखने के लिये, सर्व प्रथम वायु की आवश्यकता है। भोजन तथा जल के विना मनुष्य कुछ समय तक जीवित रह सकता है, परंतु प्राण वायु के विना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। इसीलिये भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि मैं वृक्षों में पीपल हूं।

अध्याय १० वाँ श्लोक ३० वाँ

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहम्।

अर्थ :––पशुओं में मैं सिंह हूं !

वैज्ञानिक मीमांसा

पशुओं में हाथी को सात्विक प्राणी माना गया है। फिर भगवान श्री कृष्ण ने सिंह को ही क्यों पसन्द किया ? सिंह में ऐसी कौनसी विशेषता है जो अन्य प्राणियों में नहीं ?

प्रिय वाचक वृंद, सिंह में एक विशेषता है, और वह ऐसी विशेषता है जो सर्वश्रेष्ठ मानव में भी नहीं पाई जाता। किसी कवि ने लिखा है:–

सिंह गमन सुपुरुष वचन, कदली फले एक बार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़े न दूजी बार॥

अर्थ :—सिंह की रति क्रीड़ा, सत्पुरुष का वचन और केले का फल देना यह एक ही वार देखा जाता है, वैसे ही नारियों का सुहाग सिंदूर एक ही वार भरा जाता है और इतिहास प्रसिद्ध हमीर जी एक बार आगे कदम उठाने के वाद पीछे मुड़कर भी देखना जीवन में उन के कभी भी नहीं हुआ !

प्यारे भाइयों, सिंह अपने सम्पूर्ण जीवन काल में केवल एक ही वार गृहस्थाश्रम भोगता है, और महा बलवान शेरे बबर को पैदा करता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ! सिंह में संयम की पराकाष्ठा है, इस प्रकार का संयम मनुष्य में भी देखने में नहीं आता ! विद्वान् तपस्वी महंत भी कामदेव के शिकार बने हुए पाये जाते हैं ! सिंह में आत्म संयम की पराकाष्ठा है ! इसीलिये भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि हे पार्थ, सर्व पशुओं में मैं सिंह हूं ! बल के साथ यदि संयम न हो तो वह बल राक्षसी-दानवी बल कहलाता है !

अध्याय १० वाँ, श्लोक ३३ वाँ

अक्षराणां अकारोस्मि ।

अर्थ :—अक्षरों में मैं अकार हूँ !

वैज्ञानिक मीमांसा

वर्णमाला में बहुत से अक्षर हैं उनमें से भगवान श्री कृष्ण ने "अ" को ही क्यों पसन्द किया ? ऐसा प्रश्न स्वाभाविक:ही हो सकता है ! क, ख, ग या अन्य अक्षरों को क्यों नहीं पसंद किया ? इसका कारण यह है कि अक्षरों में स्वर और व्यंजन ऐसे दो प्रकार हैं ! स्वर उसको कहते हैं जिसको किसी दूसरे अक्षरों के आधार की आवश्यकता नहीं होती !

स्वराजन्ते इति स्वराः ।

जो स्वयं सिद्ध है उसको स्वर कहते हैं ! और व्यंजन उसको कहते हैं जिसको स्वरों के सहायता की आवश्यकता होती है ! अर्थात् एक स्वतंत्र है और दूसरा परतंत्र है ! वाचक वृंद स्वयं निर्णय करें कि जब हम किसी व्यंजन का उच्चारण करते हैं, तो अन्त में हमें स्वर की ही ध्वनि सुनाई देती है ! और जब हम स्वर का उच्चारण करते हैं, तब हमें किसी भी व्यंजन की ध्वनि सुनाई नहीं देती ! इससे यह सिद्ध हुआ कि, स्वर को किसी के आधार की आवश्यकता नहीं हो सकती !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान स्वयं सर्वाधार हैं, ईश्वर को किसी के आश्रय या आधार का आवश्यकता नहीं है ! ईश्वर स्वयंभू और स्वयं सिद्ध है ! इसलिये भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि, हे अर्जुन, मैं अक्षरों में "अ" हूं ! कितनी गहन वैज्ञानिकता !

अध्याय ८ वां श्लोक १३ वां

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् यामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमांगतिम् ॥

अर्थ :—जो मनुष्य केवल ओ३म् नाम एक अक्षर रूपी परब्रह्म का उच्चारण और ओ३म् शब्द के अर्थ स्वरूप सच्चिदानंद परमात्मा का स्मरण करता है वह शरीर छोड़ने के बाद परमधाम को प्राप्त होता है।

धर्मप्रेमी भाइयो! ओ३म् शब्द की कितनी महान व्यापकता है। प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्ण ओ३म् की महिमा कितने स्पष्ट शब्दों में समझाते हैं। ओ३म् ही ईश्वर का वास्तविक नाम है। ईश्वर के अन्य नाम गुणवाचक हैं, अर्थात गौण है ! ईश्वर का प्रधान और मुख्य नाम ओ३म् ही है !

क्या पाठक वृन्द इस भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा का पालन करेंगे।

अध्याय १० वां श्लोक २२ वां

वेदानां सामवेदोस्मि।

अर्थः—चार वेदों में मैं सामवेद हूं !

वैज्ञानिक मीमांसा

चारों वेदों में भगवान श्री कृष्ण सामवेद को ही प्रमुख स्थान क्यों देते हैं ! इसका कारण यह है कि, सृष्टि काल से ही चार वेद विद्यमान हैं ! ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद ! चारों वेदों के चार मुख्य विषय हैं ! ऋग्वेद का विषय है समस्त पदार्थ मात्र का ज्ञान ! यजुर्वेद का विषय है ज्ञान को कर्म में परिणित करने का विधान !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामवेद का विषय है, परमात्मा का दिव्य अलौकिक संगीत ! और अथर्वेद का विषय है विज्ञान, अर्थात भौतिक विज्ञान के अविष्कारों का रहस्य ! .भगवान श्री कृष्ण ने सामवेद को इसलिये पसन्द किया कि, सामवेद उपासना का विषय है ! मानव जीवन का अंतिम लक्ष ईश्वर प्राप्ति है, और ईश्वर प्राप्ति का एक ही राजमार्ग है "उपासना योग" तदुपरान्त साम शब्द का एक अर्थ शान्ति भी होता है, और परम शान्ति मोक्ष, परमशान्ति यानि न्याय दर्शन का अपवर्ग, परम शान्ति यानि सांख्य दर्शन की दुःख की अत्यन्त निवृत्ति, परम शान्ति यानि वेदान्त दर्शन का ब्रह्म साक्षात्कार, परम शान्ति यानि दर्शन का कैवल्य पद, परम शान्ति यानि वैशेषिक दर्शन का निःश्रेयस, और परम शान्ति यानि पूर्व मीमासा दर्शन की स्वर्ग प्राप्ति !

मेरे भाइयो, उपरोक्त परम शांति के सारांश को शास्त्रकारों ने भिन्न-भिन्न शब्दों में जो निवेदन किया है, उन सभी का उद्गम स्थान आदि स्तोत्र सामवेद है ! सामवेद उपासना प्रधान है, और उपासना से ही मनुष्य परम शांति को प्राप्त होता है ! इसीलिए भगवान श्री कृष्ण उपदेश देते हैं कि हे अर्जुन, वेदों में मैं सामवेद हूं !

अध्याय १० वां श्लोक २२ वां

नक्षत्राणाम् अहं शशी ।

अर्थः—नक्षत्रों में मैं चन्द्रमा हूँ !

वैज्ञानिक मीमांसा

मेरे विद्वान भाइयो, सूर्य प्राण शक्ति का भण्डार है ! सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ की वृद्धि सूर्य से ही होती है ! क्योंकि सूर्य की किरणों में विटामिन A और विटामिन D होता है ! विटामिन A शरीर की वृद्धि करता है, और विटामिन D हड्डियों को मजबूत बनाता है ! सूर्य प्रकाश से यह दो तत्व प्राणी मात्र को मुफ्त में ही मिलते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार सूर्य में शक्ति और वृद्धि अर्पण करने का गुण है, उसी प्रकार चन्द्रमा में दोषों को धोने की शक्ति है ! समस्त औषधियां चन्द्रमा के तेज से ही पुष्ट होती हैं ! औषधियों को "दोषाधि" भी कहते हैं। दोषाधि अर्थात् दोषों को यानि रोगों को धोने वाली वस्तु विश्व की समस्त वनस्पतियां चन्द्र प्रकाश से अमृत तत्व चूस लेती हैं अर्थात् वही अमृत तत्वों से रोगों का नाश होता है ! शास्त्र के अनुसार सत्ताइस नक्षत्र हैं, परन्तु किसी भी नक्षत्र में दोषों को दूर करने की शक्ति नहीं है ! वह शक्ति केवल चन्द्रमा ही में विद्यमान है ! इसीलिए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि, हे अर्जुन सर्व नक्षत्रों में मैं चन्द्रमा हूँ !

उपसंहार

समग्र गीता का निश्चयात्मक सारः—

एक तटस्थ मीमांसक और सत्य के उपासक की दृष्टि से किसी भी प्रकार के पूर्वग्रह या पक्षपात बिना तथा सांप्रदायिक दृष्टि न रखते हुए कोई भी भाई श्री भगवद् गीता का अध्ययन करेगा तो उसको ज्ञात हो जायगा कि, मानव को योग्य मार्ग दिखाकर मोक्ष की अर्थात् परमशांति की ओर ले जाने वाला यदि कोई ग्रंथ है तो वह श्री भगवद् गीता ही एक मात्र ग्रंथ है ! (३)

इसी वाक्य के साथ कुछ श्लोकों की वैज्ञानिक मीमांसा आपको अर्पण करता हूँ ! पाठक विचारपूर्वक पठन करें और योग्य प्रेरणा लें ! जय श्रीकृष्ण।

जय श्री सच्चिदानन्द

असतो मा सद्गमय !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंका आर समाधान

प्रश्न १. ईश्वर कहां है ! और यदि है तो वह दिखाई क्यों नहीं देता ?

उत्तरः– ईश्वर कहां है, :यह प्रश्न ठीक नहीं है ! क्योंकि जो सभी जगह है उसके विषय में ईश्वर कहां है, ऐसा कहना 'योग्य नहीं है। दूसरेः–संसार में कितने ऐसे पदार्थ हैं, जो होते हुए भी दिखाई नहीं देते, और फिर ईश्वर को तो अनुभव द्वारा ही जाना जाता है ! क्यों वह इंद्रियों का विषय ही नहीं।

प्रश्न २. तो फिर किसका विषय है ? और उसका अनुभव किसको होता है ?

उत्तरः– आत्मा में ही परमात्मा का अनुभव होता है !

प्रश्न ३. यह अनुभव कैसे और कब होता है ?

उत्तर :– मनुष्य के मन के तीन दोष (१) मल (२) विक्षेप (३) व आवरण दूर हो जांय तब।

प्रश्न ४. इनकी परिभाषाएँ क्या हैं ?

उत्तर :– दूसरों का नुकसान हो और अपना ही लाभ हो यह मल दोष है। मनकी चंचलता तथा अहितकारक विषयों का निरन्तर चिंतन करते रहना, ा विक्षेप दोष है। और इस संसार के सभी पदार्थ नाशवान हैं जानते हुए भी उन पर अभिमान करना, तथा मोह माया का परदा आंखों पर पड़े रहना यह आवरण दोष है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न ५. इन दोषों को दूर करने का कोई उपाय भी है या नहीं ?

उत्तर :– क्यों नहीं ! ज्ञान कर्म और उपासना से उपरोक्त दोष नष्ट हो जाते हैं। ज्ञान से मल दोष, कर्म से विक्षेप दोष और उपासना से आवरण दोष नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न: ६. ईश्वर की सत्ता वगैर वृक्ष का एक पत्ता भी हिलता नहीं ऐसा सभी लोग कहते हैं, तो क्या उसके अस्तित्व का कोई प्रमाण भी है ?

उत्तर :– ऐसे लाखों प्रमाण हैं जो ईश्वर का अस्तित्व प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं ! 'अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य, तारे, :यह किसने वनाये ? ईश्वर के बिना यह कौन बना सकता है ?

प्रश्न ७. परन्तु ईश्वर को तो निराकार कहते है, फिर यह चन्द्र, सूर्य, तारे आदि उसने कैसे वनाये ?

उत्तर :– यह सारा ब्रह्माण्ड ईश्वर में समाया हुआ है, हाथों से तो वाहर की ही चीजें बन सकती हैं अन्दर की नहीं। माता के गर्भ में जो वालक होता है उसको योग्य आकार कौन देता है ? यह कार्य वही कर सकता है जो अंतर ब्रह्म विद्यमान है। दूसरी वात इस पृथ्वी से लाखों करोड़ों गुना सूर्य बृहस्पति आदि ग्रह हैं।

इनको हाथों से कैसे बनाया जा सकता है ? अर्थात् यह कार्य विना ईश्वर के हो ही नहीं सकता।

प्रश्न: ८ स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीन नाम अलग अलग क्यों हैं ?

उत्तर :– ईश्वर के गुणगान करना, यह स्तुति है, अपने दोष दूर करने के लिये उसकी सहायता मांगना यह प्रार्थना है, और सारे संसार के मोह को दूर करके ईश्वर के संन्मुख वैठने की धारणा करना यह उपासना है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न ९. ईश्वर को तो किसी ने देखा ही नहीं, तो फिर उसका ध्यान कैसे कर सकते हैं।

उत्तर : योग के आठ अंग हैं:—(१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान और (८) समाधि। उपरोक्त अंगों में ध्यान का क्रम सातवां है, जब तक उसके पहले के छः अंगों का विधिपूर्वक पालन नहीं होगा तब तक मनुष्य ध्यान का अधिकारी नहीं हो सकता, और यदि प्रथम के छः अंगों का नियम विधिपूर्वक पालन होगा तो ध्यान अपने आप लग जायगा।

प्रश्न १०. हिन्दू लोग चोटी रखते है, मुसलमान दाड़ी रखते हैं ऐसा क्यों ?

उत्तर :— आज कल तो लोग न तो दाढ़ी रखते हैं और न चोटी। परन्तु यह एक धर्म का चिन्ह है ! चोटी शरीर के सबसे ऊँचे स्थान पर होती है, और ऊँचे स्थान को ही चोटी कहते हैं ! अर्थात् जिसका धर्म चोटी का हो वही तो चोटी रखता है !

प्रश्न ११. मांस खाना चाहिये या नहीं ?

उत्तर :— मांस यह तामसिक आहार है ! और तामसिक आहार से मनुष्य के विचार भी तामसिक होते है ! इसलिए सात्विक विचार के लिये सात्विक आहार करना ही योग्य है।

प्रश्न १२. वैदिक मत के अनुसार ईश्वर निराकार है, तो फिर उसकी भक्ति किस प्रकार की जाय ? क्या ईश्वर साकार नहीं हैं ?

उत्तरः— ईश्वर को साकार मानना उनको दोषयुक्त करना है। क्योंकि ईश्वर सत्-चित्-आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द है उसमें परिवर्तन नहीं होता। दूसरे, ईश्वर को साकार मानने से वह एकदेशीय हो जाता है व्यापक नहीं रहता। साकार में जन्म, वृद्धि, क्षय जरा, और मृत्यु निश्चित है ! इसलिये ये बातें ईश्वर में नहीं होतीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न: १३. तो क्या मूर्ति पूजा नहीं करनी चाहिये ?

उत्तर :—ऐसी बात नहीं ! जब ईश्वर सभी जगह है तो वह मूर्ति में भी है, पूजा करने वाले मूर्ति की पूजा पत्थर समझकर नहीं करते। उस में जो व्यापक परमात्मा है उसकी पूजा होती है।

प्रश्न १४. हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई पारसी आदि मनुष्यों की जातियां कितनी हैं ?

उत्तर :—मनुष्य की वास्तविक एक जाति है, हां, कुल वर्ण व्यवस्था की हैं। परंतु जाति तो जन्म से ही होती है, उसमें परिवर्तन नहीं होता, परिवर्तन वर्ण में होता है। वर्ण का अर्थ है स्वीकार किया हुआ। अर्थात् जैसे गुण कर्म होंगे वैसा ही वर्ण हो जायगा।

ब्राह्मण ज्ञान से, क्षत्रिय बल से, वैश्य धन से और शूद्र शरीर से समाज की सेवा करें यह है वर्ण-व्यवस्था। तात्पर्य :—जाति जन्म से होती है और वर्ण कर्म से होते हैं।

प्रश्न १५. श्राद्ध करने से वह स्वर्ग में पितरों को मिलता है यह तो सच है !

उत्तर :—श्राद्ध अवश्य करना चाहिये ! जीवित माता-पिता की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना इसी को ही श्राद्ध कहते हैं। क्योंकि, नाते-रिश्ते आदि का संबंध इस संसार के ही साथ रहता है ! मरने पर ना कोई किसी का पितर है ना संतान। सब प्राणी अपने-अपने कर्मों का ही फल भोगने के लिए इस संसार में आते हैं। तात्पर्य :—श्राद्ध तो जीवितों का ही होता है। उदाहरणार्थ :—पुत्र जब ब्रह्मचर्य आश्रम में होता है तब पिता गृहस्थाश्रम में होता है, जहां पुत्र गृहस्थाश्रम में होगा तब पिता वानप्रस्थ आश्रम में होगा ! जब पुत्र वानप्रस्थ आश्रम में होगा तब पिता संन्यास आश्रम में होगा ! और जब पिता की मृत्यु होगी तब पुत्र संन्यास आश्रम में होगा। अब सन्यासी किस प्रकार श्राद्ध कर सकेगा? अतः किसी भी प्रकार मृतक श्राद्ध साबित नहीं होता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न १५ : श्री रामचन्द्र भगवान के साथ वंदर कितने थे ?

उत्तर :—भगवान श्री राम के साथ एक भी वंदर नहीं था। वाल्मीकि रामायण में वानर शब्द आया है, वंदर नहीं ! वंदर तो पशु होते हैं और वानर का अर्थ मनुष्य होता है।

प्रश्न १६ : तो क्या हनुमान द्रोणाचल पर्वत उठा लाये थे यह भी सच नहीं है ?

उत्तर :—साहित्य में अभिधा, लक्षणा और व्यंजना ऐसे तीन प्रकार होते हैं। अभिधा का अर्थ है जैसी वस्तु हो ठीक वैसा ही वर्णन करना ! लक्षणा का अर्थ भिन्न है, जैसे :—सास मरने के बाद बहू ने सारा घर सिर पर ले लिया इसका अर्थ यह तो नहीं कि फर्श, दिवालें, छप्पर आदि सर पर ले लिये। इसी प्रकार हनुमान आवश्यकता से अधिक वनस्पति (बूटी) ले आये तो सुषेण ने कहा, आप सारा पर्वत ही उठा लाये क्या ? यह लक्षणा है। ऐसी वहुत सी बातें हैं, पृष्ठ विस्तार के कारण इतना ही विचारी वाचक वृन्द के लिए पर्याप्त है।

प्रश्न १७ : जटायु पक्षी था यह भी गलत है क्या ?

उत्तर :—विल्कुल गलत। वाल्मिकी रामायण में जटायु ने अपना परिचय श्री रामचन्द्र जी को दिया है कि मैं और महाराजा दशरथ एक ही गुरुकुल में पढ़ते थे। इससे स्पष्ट है कि जटायु पक्षी नहीं था।

प्रश्न १८ : रावण को दस मुख थे क्या यह सच नहीं ?

उत्तर :—इस बात को सच कहना बड़ी भारी भूल है, अज्ञानता की परिसीमा है। यदि मान लिया कि रावण को दस मुख थे, तो सीता हरण के समय में उसके नौ मुँह कहां चले गये थे ? जब वह एक ही मुख से बोलता था तो बाकी नौ मुखों का कौनसा उपयोग था ? यह सारी बेसमझी की बातें हैं।

मैं यहाँ पर स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि आध्यात्मिक ग्रन्थ पढ़ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से पूर्व साहित्य की दृष्टि से वाचक को अभिधा, लक्षणा और व्यंजना का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

प्रश्न १९ : भारत में गायत्री मंत्र भी है, और गायत्री देवी भी है तो क्या गायत्री मंत्र में गायत्री देवी का वर्णन किया है ?

उत्तर :—गायत्री मंत्र यह वेदों का सबसे श्रेष्ठ मंत्र है। इसका संक्षिप्त में इतना ही अर्थ है कि:—हे जगत्पति परमात्मा आप हमारी बुद्धि को इस प्रकार की प्रेरणा दो कि हम आपके ही बताये हुए मार्ग पर चलें। गायत्री का एक अर्थ यह भी है, गय=प्राण त्री=रक्षा अर्थात् प्राण रक्षक मंत्र। तात्पर्य :—गायत्री मंत्र का पाठ करने वाला संकट मुक्त होता है।

प्रश्न २० : यह पृथ्वी शेष नाग पर खड़ी है ऐसा लोग कहते हैं क्या यह ठीक नहीं ?

उत्तर:—यह संपूर्ण जगत शेष पर ही आधारित है, यह सच है परन्तु शेष का अर्थ जो शेष नाग करने में आया है वह बिलकुल गलत है !! शेष का अर्थ है बाकी, यानी शेष ! संपूर्ण विश्व में व्यापक होते हुए भी जो शेष रहता है उसी के आधार पर यह विश्व खड़ा है। कहा भी है:—शेषाधारे सृष्टि। तात्पर्य:—यह सम्पूर्ण जगत ईश्वर के आधार पर ही आधारित है क्योंकि शेष नाम ईश्वर का है। अब कोई कहे कि यह सृष्टि बैल के सींग पर है, कोई कहे कछुवे के पीठ पर है, सूअर के दांत पर है, यह सारी अज्ञानता की बाते हैं। सोचना तो यह है कि जिनके सींग पर, पीठ पर या दांत पर यह सृष्टि खड़ी है तो इस सृष्टि को सींग पर, पीठ पर, दांत पर लेने वाले किस पर खड़े हैं।

तात्पर्य:—प्रत्येक का निर्णय विवेकपूर्ण होना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौलिक वचन

१. "अनुभव यह ऐसा विचित्र शिक्षक है जो पहले परीक्षा लेता है और बाद में सिखाता है।"

२. "प्रार्थना करने वाले होठों से मदद देने वाले हाथ अधिक उपयुक्त तथा पवित्र होते हैं।"

३. "आप हंसेंगे तो सभी आप के साथ हंसेंगे परन्तु आप रोएंगे तो आपके साथ कोई भी नहीं रोएगा।"

४. "आत्मा के अलंकार सद्गुण हैं धातुओं के जेवर नहीं।"

५. "सबसे बड़ा अधिकार पाने का साधन है सेवा और प्रेम।"

६. "मन का बोझ हलका करने का साधन है शरीर श्रम।"

७. "कृतघ्नता के समान और कोई भी पाप नहीं।"

८. "निर्भयता ही स्वतन्त्रता की असली कुंजी है।"

९. "धर्म, सत्य, शक्ति और लक्ष्मी उसी के पास होती है जिसने अपने शील को सम्हाला है।"

१०. "मित्रता निभाने का एक ही मार्ग है। उधार मांगो मत और वापस लेने की आशा से उधार दो मत।"

११. "कार्य के पारितोषिक का अर्थ कार्य से छुट्टी नहीं अपितु अधिक जवाबदारी के लिये तैयार रहना।"

१२. "सही अर्थों में जब सुविचार जागृत होते हैं तो फिर वे सो ही नहीं सकते।"

१३. "आज पढ़ना तो सभी जानते हैं परन्तु क्या पढ़ना चाहिये यह बहुत कम लोग जानते हैं।"

१४. "सद्गुण आचरण में लाने के लिये होते हैं प्रशंसा के लिये नहीं इतनी ही समझदारी प्रर्याप्त है।"

१५. "विचार करने के पहले ही उत्तर देने वाला व्यक्ति अपने आप को हलका बना देता है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६. दुनियां की नजरों से गिर जाने से कुश्रां, बावड़ो में गिर जाना अधिक अच्छा।"

१७. "जो स्वयं सीख रहा है वो ही सच्चा सुशिक्षित है।"

१८. "जिसके पास सहनशीलता है वही भाग्य पर विजय पा सकता है।"

१९. "मिठास वस्तुओं में नहीं होती किन्तु उन वस्तुओं को प्राप्त करने में जो श्रम किये हैं उन श्रमों में होती है।"

२०. "मनुष्य की सद्सद्विवेक बुद्धि का अर्थ ही ईश्वर की आवाज है।"

२१. "भूल करना मनुष्य का लक्षण है और भूल को क्षमा करना देवताओं का लक्षण है।"

२२. "क्षमा करना अच्छा है लेकिन उसे भूल जाना उससे भी अच्छा है।"

२३. "आदतों का प्रतिकार न किया जाय तो एक दिन वह आवश्यकता बन जायेगी।

२४. "सभ्यता से नुकसान कुछ भी नहीं होता और फायदे अनेक होते हैं।"

२५. "अधिकार सिद्ध करने के लिये वह बताना ही चाहिये यह समझना भूल है।"

२६. "अतिथि सत्कार के लिये मुंह फेर लेना यह मन की दरिद्रता का लक्षण है।"

२७. "जो अपनी जीवनाहुति देता है वह अमरत्व को प्राप्त होता है।"

२८. "अश्रद्धा यानि धीरे-धीरे होने वाला आत्म नाश।"

२९. "जो स्वय जलता नहीं वह दूसरों को प्रज्वलित नहीं कर सकता।"

३०. "जो स्वयं विचार करता है, दूसरों का अनुकरण नहीं करता वह ही स्वतन्त्र मनुष्य है।"

३१. "कर्जा यह ऐसा मेहमान है जो घर में आने के बाद जाने का नाम ही नहीं लेता।"

३२. "चरित्र मनुष्य के अन्दर होता है और यश बाहर होता है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३. "जिस प्रकार डॉक्टर रोग की परीक्षा करते हैं उसी प्रकार तत्व ज्ञानी स्वभाव को जान जाते हैं।

३४. "आप जीवित हैं तब तक विश्रान्ति का नाम मत लेना क्योंकि मृत्यु के बाद विश्रान्ति के लिये काफ़ी समय मिलेगा।"

३५. "जिस प्रकार शरीर को स्वास्थ्य की आवश्यकता है उसी प्रकार मन को विवेक की आवश्यकता है।"

३६. "उत्साह से जवान जवान ही रहते हैं पर वृद्ध भी जवान बन जाते हैं।"

३७. "मनुष्य जीवन श्रेष्ठ और बड़ा बनने के लिए है दिन काटने के लिए नहीं।"

३८. "जहाँ अद्भुत साहस है, दूरदर्शिता है वहाँ सब कुछ है, ऐश्वर्य उत्साही के पैर चूमता है।"

३९. "इच्छा, ज्ञान और क्रिया इन तीन तत्वों को स्वतः में केन्द्रित कर आप प्रचंड शक्ति उत्पन्न कर सकते हैं ?"

४०. 'वास्तव में संसार में कुछ भी नया नहीं है जो कुछ है वह पहले से ही विद्यमान है।"

४१. "सावधान ! दूसरों का अनुकरण न करें, अनुकरण व्यक्तित्व की मृत्यु है।"

४२. "सफलता न भविष्य के गर्भ में है न अगम्य है वह तुम्हारे निकट है।"

४३. "अपनी योग्यता का ठीक अनुमान तुम्हारी उन्नति में सहायक होगा।"

४४. "तमोगुण, कुभावनाओं, कुकल्पनाओं तथा कुविचारों से मनुष्य का मनोबल क्षीण हो जाता है।"

४५. "आत्मविकास के भिन्न-भिन्न स्तर होते हैं सबको एक ही स्तर पर समझकर कार्य करना मूर्खता है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६. "ईर्षा की अग्नि अंदर ही अंदर सुलगती रह कर समस्त मौलिकता और साहस को मार डालती है"

४७. "घर में स्कूल होना चाहिये और स्कूल में घर, यह सिद्धांत नवशिक्षण का प्रमुख आधार है"

४८. "व्यंग्योक्तियां शिक्षाप्रद होनी चाहिये उसमें शिष्टता की सीमा का अतिक्रमण न हो"

४९. "साहित्य में जिन नवरसों का विधान है उनका प्रकाशन मुख-मुद्रा एवं भावभंगी से होना अपेक्षित है"

५०. "लोकप्रियता अनायास ही नहीं आ जाती प्रत्युत वह व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक प्रयोग पर निर्भर रहती है।"

५१. "भूल को स्वीकार करने में मनुष्य की महत्ता कम नहीं होती किन्तु उसके महान आत्मिक साहस का पता चलता है।"

५२. "प्रत्येक मित्र एक नयी किताब के समान नये नये अनुभवों का खज़ाना है।"

५३. मित्रता वहीं निभती है जहां जीवन में समता हो, अथवा अभि-रुचिओं में अनुरूपता हो।"

५४. "मित्रतापूर्ण व्यवहार करने से आप ऐसा दर्पण बन जाते हैं कि जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रतिबिम्ब देखता है।"

५५. "सहानुभूति ईश्वर की दैवी देन है। रुपये पैसों से इसकी कीमत कई गुना अधिक है। यह मानसिक रोगों की महान् औषधि है।"

५६. "चिता के समान कोई अग्नि नहीं, द्वेष के समान कोई विष नहीं, क्रोध के समान कोई शूल नहीं और लोभ के समान कोई जाल नहीं।"

५७. "ईश्वर भक्त वही है जिसके पास सहानुभूतिपूर्ण संवेदनशील हृदय है।"

५८. "उत्साही और आशावादी का ही साथ करो। उनसे दूर रहो जो भविष्य को निराशाजनक या अंधकारमय बताते हैं।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५९. "आशा इस छोटे से दो अक्षर के शब्द के सहारे सारा संसार बसा हुआ है।"

६०. "पराजय की कड़वाहट चखने के बाद ही महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त होती है।

६१. "मनुष्य विश्वास का दास है बिना विश्वास के वह बलवान होते हुए भी निर्बल है।"

६२. संसार की सबसे निकृष्ट वस्तु है विचार दारिद्रय। विचार दारिद्रय ने ही मानव की असीम आत्मा को संकुचित पराधीन एवं हीन बनाया है।"

६३. "आत्मोन्नति का अर्थ है भूलों को सुधारते हुए परम पद की ओर अग्रसर होना।"

६४. "जिसे संदेह है उसे कहीं भी ठिकाना नहीं, उसका नाश निश्चित है। वह रास्ते से चलता हुआ भी नहीं चलता है।"

६५. "बात को पचाकर मन में न रखने वाला व्यक्ति किसी बड़े पद के लिये उपयुक्त नहीं हो सकता।"

६६. "पूंजीवादी व्यवस्था में नैतिक मान मर्यादा का मूलाधार रुपया हो जाता है।"

६७. "ठोकर लगना अपराध नहीं किन्तु उसके बाद न सम्हलना अपराध है।"

६८. "युद्ध से कल्याण सोचना यह घर जला कर रोटी पकाने जैसी बात है।"

६९. "धोके से धन कमाना कच्चे घड़े में पानी भरना है।"

७०. गरीबी और अमीरी एक हिम है दूसरी अग्नि है।"

७१. "अहंकार फरिश्तों को शैतान बना देता है और नम्रता मनुष्यों को देवता बना देती है।"

७२. "जिसका निर्णय दृढ़ और अटल है वह सारे संसार को अपने सांचे में ढाल सकता है।"

७३. "दूसरों का दीया अवश्य जलाओ परन्तु अपना ना बुझने पाये।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भजन

१

लगाले ओम नाम का ध्यान।
ओम नाम से तरजायेगा ओम ही से कल्याण। लगाले।

ध्यान निर्विषय होना मनका।
सत्य प्रमाण सांख्य दर्शन का।
ज्ञान बुद्धि से सोच समझले मत होना नादान लगाले ॥ १ ॥

पंच इंद्रियाँ कर्म विषय हैं।
इस में ना कोई संशय है।
ध्यान अवस्था चित्त निरोधन होवे योग समान। लगाले ॥ २ ॥

पत्थर का मन्दिर बनवाया।
मूरत भी पत्थर की लाया।
दोनों ही पत्थर हैं तो, फिर कौन तेरा भगवान। लगाले ॥ ३ ॥

"विद्याशंकर" ध्यान लगाले।
ज्ञान चक्षु से दर्शन पाले।
योग कर्म साधन से ही, कर आध्यात्मिक कल्याण लगाले ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२

भजले एक सच्चिदानन्द ।

वही परम सुख वही जीवन रुख वही परम सुख कंद ॥भज०॥

इस जीवन में ज्योति जगा दे ।

काम क्रोध मद 'मोह' भगा दे।

जीवन नैया पार लगादे होगा परमानन्द । भज० ॥ १ ॥

देख लिया तो सब है अपना ।

सोच लिया तो सब है सपना ।

इसी लिये नित ओम ही जपना छुट जाये भवबंध । भज० ॥ २ ॥

"विद्याशंकर" जग का भिस्ती ।

पान करावे वस्ती वस्ती ।

कीमत इसकी सबसे सस्ती पिवे भद्र मतिमंद । भज० ॥ ३ ॥

३

नादान मुसाफिर कुछ तो समझ, वह देख सुबह का चढ़ता सूरज,
जब शाम हुई तो ढल गया ।

हंस खेल के बीत गया बचपन ।

और जवानी खा गई तन मन धन ।

फिर आया बुढ़ापा लेके कफन ।

अब रोने से क्या होता है, क्यों अश्कों से मुंह धोता है ।
जब दांव हाथ से निकल गया । जब शा० ॥ १ ॥

तू कब तक खुद को छुपायेगा ।

जब दम तेरा रुक जायेगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर काम नहीं धन आयेगा।
ऐसे लाखों धनवान गये। बलवान गये गुणवान गये।
कोई आज गया कोई कल गया। जब शा० ॥ २ ॥
जैसी करनी वैसी भरनी।
ना साथ आवे सुत प्रियकरनी।
चल छोड़ उतर जा वैतरनी।
विद्याशंकर" जो होता है। कोई सोता है कोई खोता है
कोई संभल गया कोई फिसल गया। जब शाम० ॥३॥

४

मैया मोहे ला दो चुनरी रंगदार।
ओम नाम का वृक्ष और गायत्री डाली हो।
सत्य नाम के पुष्प खिले और वेद शास्त्र हरियाली हो।
भक्ति भाव का निर्मल धागा सत संग रंग में डार।
ऐसी लादो० ॥ १ ।
ब्रह्म नाम के फल हो सुन्दर चुनरी के सब कोने में।
ओम नाम लिखवादो उनपर छूट न जाये धोने से।
उपनिषदों के बेल और बूटे दर्शन की हो किनार।ऐ० ला० ॥२॥
गंगा जमुना और नर्मदा सरस्वती शिव काशी हो।
पातांजलि जैमिनी महर्षि दयानन्द संन्यासी हो।
कणाद और पिपलाद कपिल सब होवे दर्शन कार।ऐ०ल० ॥३॥
ऐसी ही चुनरी रंगवा दो जो सब विध वैभव शाली हो।
सत्यं-शिवं-सुन्दरं उसमें शुद्ध प्रेम की जाली हो॥
"विद्याशंकर" चुनरी पर न्यौछावर सब श्रृंगार। ऐ० ला० ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथि... पु०सं०...1889 भारती पुस्तकालय

जहां में हमारा सहारा नहीं है,
तो हमें ऐसी दुनिया गवारा नहीं है।
ये दुनियाँ के दाता हैं काजी पुजारी।
ये जन्नतके मालिक हैं लेकिन भिखारी।
गरीबों का वाली नहीं है यहां पर।
मूरत पे देखो तो लाखों का जेवर।
धरम का यहाँ पर गुजारा नहीं है। तो हमें ऐसी० ॥ १ ॥
ग़रीबों को सर्दी से दम तोड़ने दो
मूरत पे मखमल की चादर चढ़ा दो।
ये भगवान को दान देने चले हैं।
ये ईश्वर पे अहसान करने चले हैं।
ग़रीबों का दुनिया में चारा नहीं है। तो हमें ऐसी० ॥ २ ॥
सब इन्सां बराबर बनाये गये हैं।
मगर कुछ नज़र से गिराये गये हैं।
उन्हें कब धरम की तबाही का ग़म है।
उन्हें डूब मरने को दर्या भी कम है।
ज़ो गिरते को किसने संवारा नहीं है। तो हमें ऐसी० ॥ ३ ॥
ये मंदर नहीं खूद सूरत बला हैं।
हजारों का बरसात में घर जला है।
ये मजहब नहीं लूटने की कला है।
और भाई को भाई मिटाने चला है।
यहाँ विद्याशंकर किनारा नहीं है। तो हमें ऐसी० ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख से ओम नाम नित बोले।
मोल अमौलिक सुन्दर काया।
इसको अब तक देख न पाया।
जीवन सारा व्यर्थ गवांया।
अब तो प्रभु का होले। मुख० ॥ १ ॥

शरीर तेरा ब्रह्म पुरी है।
जीव आत्मा की नगरी है।
किसी शिल्पी की कारिगरी है।
देख नयन को खोले। मुख० ॥ २ ॥

सप्त ऋषि इस में रहते हैं।
ऋषि भूमि इसको कहते हैं।
पंच ज्ञान इंद्रियाँ बुद्धि मन।
निवास इनका धोले। मुख० ॥ ३ ॥

मंदर है यह नौ द्वारे का।
निवास है प्रीतम प्यारे का।
जीव के तारनहारे का।
फिर बाहर काहे टटोले। मुख० ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथी ... भारती पुस्तकालय
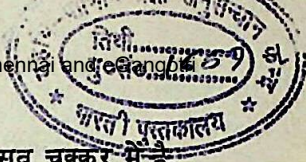
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई सबके सब चक्कर में है,
मूर्ति पूजा घर घर में है।

एक ही जैसे कावा मंदर।
इधर उधर दोनों में पत्थर।
इधर पूजतें उधर चूमते,
दोनों भी चक्कर में है। मूर्ति पू० ॥ १ ॥

ये गणेश लाते। वो ताजिये विठाते।
दोनों विठाते दोनों डुबाते।
गाते वजाते नाच नचाते।
क्या पागलपन सर में है। मूर्ति पू० ॥ २ ॥

मंतर बिकते जंतर बिकते।
तावीजों में कुरान बिकते।
बाजारों में पुरान बिकते।
पत्थर के भगवान हैं बिकते।
पत्थर ही अंतर में है। मूर्ति पू० ॥ ३ ॥

कहलाते ईश्वर के वन्दे।
ज्ञान बिना सबके सब अंधे।
ऐसे ही सब गोरख धंधे।
स्वार्थ समाया सर में है। मूर्ति पू० ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चिदानन्द से मन लगाते चलो।
और दीपक से दीपक जलाते चलो ।।टेर।।

ज्ञान से गूढ तत्वों को पहेचान लो।
कौन मैं हूँ यही कम से कम जानलो।
ज्ञान श्रद्धा से जीवन जगाते चलो ।।और दीप० ।।१।।

अपना जीवन है जग में बड़ा कीमती।
होके निश्चित योंही न करना इति।
पैर कर्तव्य पथ पर बढाते चलो। और दीप० ।।१।।

स्थान श्रद्धा का ऊंचा कहा ज्ञान से।
ज्ञान की भी प्रतिष्ठा है श्रद्धान से।
लाभ जितना उठाना उठाते चलो। और दीप० ।।३।।

९

मैं तेरा ही दीवाना हूं।
देख लिया गृह धन सुत दारा।
मिथ्या है सब मोह पसारा।
सब छोड़ बना बेगाना हूं। मै तेरा० ।।१।।

अब ना मुझको कोई मरज़ है।
इस दुनिया की कोई गरज़ है।
अलमस्त बना मस्ताना हूं। मैं तेरा० ।।२।।

तू प्रकाश और मैं हूं छाया।
तू जीवन और मैं हूँ काया
तू दीप मैं परवाना हूं। मैं तेरा० ।।३।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विद्याशंकर" जगत प्रवासी।
तू दाता और मैं वनवासी।
तू विरेन्द्र मैं वीराना हूं। मैं तेरा० ॥४॥

1669 पुस्त० भारती पुस्तकालय

१०

भंवर में है नैया दिखा दे किनारा।
प्रभु अपनी रहेमत का दे दे सहारा ॥टेर॥

इस दुनिया से तेरा पिता का है नाता।
जब तू ही पिता और तू ही विधाता।
तो फिर तेरी सन्तान है क्यूं अवारा। प्रभू अ० ॥१॥

जब तूने बनाये और तूने जिलाये।
तो दुनिया की आतिश इन्हें क्यूं जलाये।
ये कैसे तुझे हो रहा है गवारा। प्रभू अ० ॥२॥

कहे विद्याशंकर दया कर विधाता।
तू अपने ही बच्चों को क्यूं कर सताता।
विछड़ जायेंगे गर तूने ना संवारा। प्रभु० अ० ॥३॥

११

बड़ी अनोखी रीत ।प्रभु की।
हंसना सीखा मैंने रोके।
सब कुछ जीता सब कुछ खोके।
हार में देखी जीत। बड़ी ॥१॥

अडसट तीरथ करके आया।
लेकिन उसका पता न पाया।
मोह माया में मन भरमाया।
मिला न कोई मीत। बड़ी ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याशंकर अब पहिचाना।
अन्तर में ही उसको जाना।
उसका ही संगीत सुनाना ॥बड़ी॥३॥

१२

महर्षि दयानन्द बेमिसाल तेरा काम।
सैकड़ों सहस्र करोडों मेरे प्रणाम ॥
संदेश तेरा जाके मैं घर घर में कहूँगा।
हर एक मुसीबत को मैं हंस हंस के सहूँगा।
दर दर भटकता जाऊंगा बनकर तेरा गुलाम। सैक०॥१॥
घर घर में तेरे नाम को बाला करूंगा मैं।
दिल को जला जला के उजाला करूंगा मैं।
बिक जाऊं तेरे नाम पे या हो मेरा लिलाम। सैक० ॥२॥
मुझको तो दयानन्द ने चलना सिखा दिया।
गिरने से पहले उसने संभलना सिखा दिया।
रास्ता दिखा रहा है दयानन्द का हर कलाम। सैक० ॥३॥
जीवन में विद्याशंकर गाता ही रहेगा।
वैदिक धर्म के गीत सुनाता ही रहेगा।
जब तक है प्राण तन में आराम है हराम ॥सैक०॥४॥

तिथी....... पु०सं०1784 भारती पुस्तकालय

एक खुश खबर

समस्त आर्य भाइयों से विशेष रूप से निवेदन है कि पं० विद्याशंकर जी शास्त्री बायबिलाचार्य, हाफिजे कुरआन तथा संगीत रत्न इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अंतर्गत सेवा दे रहे हैं।

पंडितजी उत्तम संगीतकार तो हैं ही लेकिन वक्तृत्व में भी आपकी शैली अनोखी है। पंडितजी सिनेमा चित्रपटों के म्युजिक डायरेक्टर रह चुके हैं हिंदी मराठी चित्रों में अनेक पिक्चरों में आपने संगीत दिया है। इसलिये आपका संगीत जनता अधिक पसन्द करती है।

आप अपने नगरों में उत्सवों तथा वेद प्रचार के कार्य पर पंडितजी का अवश्य लाभ लेवें।

—वैद्य मोहनलाल वीरूमलआर्य प्रेमी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकीमवीरूमल आर्य प्रेमी

के

४३ वर्ष के

अनुभव और परिश्रम से तैयार की हुई दवाइयों के चमत्कार को दुनिया जानती है।

मैंने लगातार ३२ वर्ष तक पूज्य पिताजी के चरणों में रहकर जो विद्या प्राप्त की और दुःखी भाइयों की सेवा करते हुए जो अनुभव प्राप्त किया उस विद्या और अनुभव द्वारा गुप्त रोगों में फंसे हुए हज़ारों लोग स्वस्थ हुए हैं।

हम आपको विश्वास दिलवाते हैं कि हमारी फार्मेसी में तैयार की हुई दवाइयाँ, आपके रोग, कमज़ोरी और निराशा को दूर कर आपको स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट बना देंगी।

आपका जीवन आनन्दमय बनेगा, और हमें विश्वास है कि आप नई शक्ति और तन्दुरुस्ती प्राप्त कर उस परम पिता परमात्मा के गुण गान करेंगे जिस ईश्वर ने कृपा कर हमारे हाथों में सफलता दी है।

आप रूबरू आयें अथवा रोग परीक्षा पत्र भर कर दवाइयाँ मंगवायें। हर स्थिति में आपको पूर्ण और भरपूर लाभ होगा।

आपका भाई

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी

आर्यन फ़ार्मेसी, आर्य प्रेमी भवन,

नला बाज़ार, अजमेर (राज.)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यन फार्मेसी के जन्मदाता हकीम वीरूमल

आर्यप्रेमी अजमेर द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

सस्ता और सुन्दर आज ही मंगवाकर एक बार

अवश्य पढ़ें तथा औरों को भेंट करें

आर्याभिविनय—श्री डॉ० सूर्यदेवजी शर्मा मूल्य २० पैसे

अथर्ववेद शतक—श्री स्वामी अच्युतानन्दजीसरस्वती मूल्य ५० पैसे

वेद सुधा—लेखक : पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक मूल्य ५० पैसे

सामवेद शतक—श्री स्वामी अच्युतानन्दजी सरस्वती मूल्य ५० पैसे

यजुर्वेद का १८ वां अध्याय—

श्री पण्डित ब्रह्मानन्दजी त्रिपाठी आयुर्वेद शिरोमणि मूल्य ५० पैसे

प्यारा ऋषि—श्री महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती मूल्य २५ पैसे

रुद्रस्तोत्र अथवा भक्त की पुकार— मूल्य ५० पैसे

यजुर्वेद का १६ वां अध्याय ईश्वर भक्ति की प्रार्थना

रूप में श्री रणवीर बी० ए० सम्पादक 'मिलाप'

गीतांजलि—संकलनकर्त्ता : वेदरत्न आर्य बी. ए. मूल्य ५० पैसे

यमनियम-प्रदीप अर्थात् सदाचार प्रवेशिका— मूल्य ५० पैसे

श्री पण्डित जगत्कुमार शास्त्री

बाल सत्यार्थ प्रकाश-१४ समुल्लास मूल्य ४० पैसे

लेखक पं० शिव शर्मा जी महोपदेशक

ईशोपनिषद् अर्थ सहित मूल्य २५ पैसे

तम्बाकू-लेखक-पं. रामचन्द्रजी आर्य मुसाफिर मूल्य २५ पैसे

वर्ण विभेद मीमांसा पं. रामचन्द्रजी आर्य मुसाफिर मूल्य २५ पैसे

पुस्तकें मंगाने का पता:—

आर्य प्रेमी कार्यालय

आर्यप्रेमी भवन, आर्यन फार्मेसी, नला बाजार, अजमेर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.